नूतन निष्काम पत्रिका

नूतन निष्काम पत्रिका * वर्ष-११ * अंक-२ * मुम्बई * फरवरी-२०२० * मूल्य-रु.९/-

आर्य समाज सान्ताक्रुज़ के ७६ वाँ वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार समारोह के कुछ छाया चित्र

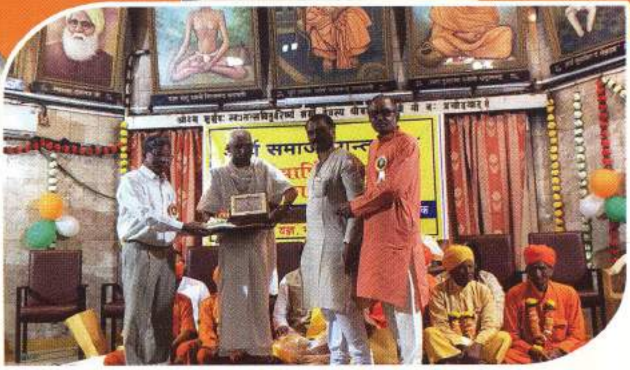

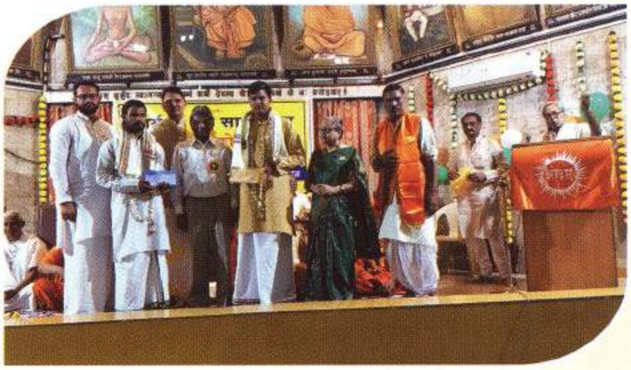

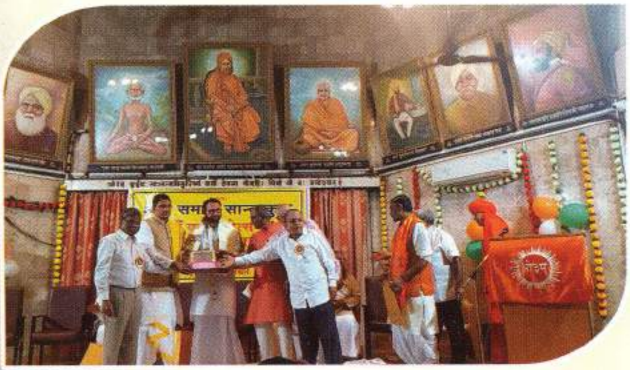

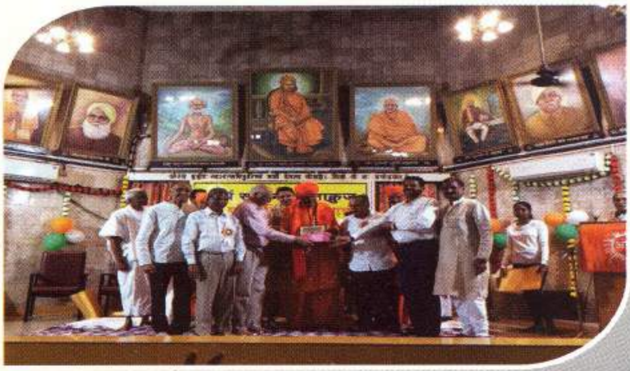

यज्ञ के भेद-प्रभेद

स्वामी यज्ञदेव-वैदिक गुरुकलम

चीन ग्रन्थों एवं परम्पराओं में यज्ञों की बहुतायत रूप में प्रचलन रहा है। विभिन्न लाभों के लिए अनेकों प्रकार के यज्ञ किए जाते रहे हैं। आइए! इनके विधान व प्रकारों को विस्तारपूर्वक जानते हैं।

कतिपय यज्ञों के उल्लेख अथर्ववेद में मिलते हैं। यथा-

राजसूयं वाजपेयमग्निष्टोमस्तदध्वरः।
अर्काश्वमेधावच्छिष्टे जीवबर्हिमदिन्तमः।।
अग्न्याधेयमथो दीक्षा कामप्रछन्दसा सह।
अग्निहोत्र च श्रद्धाच वषटकारो व्रतं तप ।।
चतुर्होतार आप्रियश्चातुर्मास्यानि नीविदः।
उच्छिष्टे यज्ञा होत्रः पशुबन्धास्तदिष्ट्यः।। (अथर्ववेद, 11.7.7.9)

मनुष्यों को योग्य है कि परमेश्वर की आराधना करते हुए राजसूय, वाजपेय, अग्निष्टोम, अश्वमेध, अग्न्याधान, अग्निहोत्र, चातुर्मास्य एवं पशुबन्ध आदि यज्ञों से समस्त प्राणियों को आनन्द देवे।

ऐतरेय ब्राह्मण में पाँच प्रकार के यज्ञ प्रधान माने गये है- स एष यज्ञः पञ्चविधः। अग्निहोत्र, दर्शपौर्णमासौ, चातुर्मास्यनि, पशु, सोम इति।। (ऐतरेय ब्राह्मण, 2.3 ऐतरेय आरण्यक, 2.3.3)

गौतम धर्मसूत्र में तीन प्रकार की यज्ञसंस्थाओं के 21 यज्ञभेदों का उल्लेख है। यथा-औपासनहोमः वैश्वदेवं पार्वणमष्टका मासिकश्राध श्रवणा शूलगवेति सप्त पाकयज्ञसंस्था। अग्निहोत्रं दर्शपूर्णमासौ आग्रयणं चातुर्मास्यानि निरूढ़पशुबन्धः सौत्रमणि पिण्डपितृयज्ञादयो दर्विहोमा इति सप्तहवियज्ञसंस्था। अग्निष्टोम अत्यग्निष्टोमोक्थय षोडशी वाजपेयातिरात्रसोयामेति सप्तसोमसंस्थाः।।

(गौतम धर्मसूत्रणि, 8.8)

सात पाकयज्ञ- औपासन, वेश्वदेव, पार्वण, अष्टका, मासिकश्राद्ध, श्रवणा और शूलगव।

सात हविर्यज्ञ- अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, आग्रयण, चातुर्मास्य, निरूढ़पशुबन्ध, सौत्रमणि और पिण्डपितृ नामक दर्विहोम।

सात सोमयज्ञ- अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्थय, षोड़शी, वाजपेय, अतिरात्र, और आसोर्याम।

इसी धर्मसूत्र में ही अन्यत्र सातवें हविर्यज्ञ के (पिण्डपितृयज्ञ) को छोड़कर अग्न्याधान को प्रथम स्थान में गिनाया गया है।

महर्षि कात्यायन ने कात्यायनश्रोतसूत्र के विभिन्न अध्यायों में कुछ अन्य भेदों का वर्णन किया है। वे हैं- दक्षायणं, एकाह, द्वादशाह, अग्निचयन, अश्वमेध, अभिचार, सत्र, सोमयाग, गवायमन, राजसूय, पुरूषमेध, प्रायश्चित तथा प्रवार्य। (कात्यायन श्रोतसूत्र, अध्याय 4 से 26)

महर्षि मनु ने आवश्यक दैनिक कर्तव्यों को पांच महायज्ञ कहा है-

अध्यापनं ब्रहायज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो बलिर्मातो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम ।। (मनुस्मृति, 3.70)

अध्यापन-कार्य ब्रह्मयज्ञ, पितरों का तर्पण पितृयज्ञ, होमकार्य दैवयज्ञ, बलिप्रदान भूतयज्ञ एवं अतिथि-सत्कार नृयज्ञ हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता में पांच यज्ञों का उल्लेख है। यथा-

द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथापरे।
स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः ।।

(गीता , 4.28)

द्रव्ययज्ञ, तपयज्ञ, योगयज्ञ, स्वाध्याययज्ञ और ज्ञानयज्ञ। उक्त ग्रन्थ में ही यज्ञ के सात्विक, राजसिक एवं तामसिक भेद किये गये हैं। यथा-

सात्विक यज्ञः-

अफलाकाङ्क्षिभिर्यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते।
यष्टव्यमेवेति मनः समाधाय स सात्विकः ॥ गीता, 17.11

जो यज्ञ शास्त्रविधि से नियत किया हुआ है तथा करना ही कर्तव्य है ऐसे मन को समाधान करके फल को न चाहने वाले पुरुष द्वारा किया जाता है, वह यज्ञ, सात्विक है।

राजसिक यज्ञः-

अभिसंधाय तू फलं दम्भार्थमपि चैव यत्।
इज्यते भरतश्रेष्ठ तं यज्ञं विद्धिराजसम्।। (गीता, 17,12)

जो यज्ञ केवल दम्भाचरण के ही लिये अथवा फल को भी उद्देश्य रखकर किया जाता है, उसे राजसिक यज्ञ कहते हैं।

तामसिक यज्ञः-

विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम्।
श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते।। (गीता, 17,13)

शास्त्रविधि से हीन, अशुद्ध, अपवित्र द्रव्यों से किया गया हो, बिना मन्त्रों के, बिना दक्षिणा के और बिना श्रद्धा के किये हुए यज्ञ को तामस यज्ञ कहते हैं।

महर्षि मनु द्वारा कहे गये 'देवयज्ञ' तथा गीता में कहे गये 'द्रव्ययज्ञ' को द्विधा विभाजित करते हुए यज्ञविवेचक विद्वानों ने लिखा है- 'द्रव्ययज्ञ, श्रौत और स्मार्त भेद से अनेक प्रकार है। जिन यज्ञों का श्रुति (मन्त्र एवं ब्राह्मण) में साक्षात् उल्लेख मिलता है, उन्हें 'श्रौतयज्ञ' कहते हैं। जिन यज्ञों का ऋषिलोग स्मृतियों में विधान करते है, उन्हें स्मार्त कहते हैं। गृह्यसूत्रोक्त यज्ञ भी स्मार्तयज्ञों में ही गिने जाते है। इन दोनों प्रकार के यज्ञों के नैत्यिक, काम्य, नैमिक्तिक ये तीन भेद हैं-

1) नैत्यिक यज्ञ-जिन को प्रतिदिन आवश्यक रूप से करना अनिवार्य है। यथा-महर्षि मनु प्रोक्त 'पञ्चमहायज्ञ'।

2) नैमित्तिक यज्ञ- जो किसी निमित्त से किये जाये वे नैमित्तिक यज्ञ कहे जाते है। यथा-षोडश संस्कार, प्रकृतिक संयोग वा उत्पात के कारण किये जाने वाले यज्ञ (प्रदूषण निवारक यज्ञों को नैमित्तिक यज्ञ कह सकते हैं)

3) काम्य यज्ञ- जो किसी कामना विशेष से किये जायें। तथा वर्षेष्टि, पुत्रेष्टि आदि यज्ञ।

7 हविर्यज्ञ और 7 सोमयज्ञ=14 यज्ञ श्रोतयज्ञ कहे जाते है, एवं 7 पाकयज्ञों को स्मार्तयज्ञ कहते हैं। इस प्रकार यह कुल 21 यज्ञ हैं। (श्रोतयज्ञों का संक्षिप्त परिचय, युधिष्ठिर मीमांसक, पृष्ठ-7)

वैदिक सम्पत्तिकार ने कर्म, ज्ञान तथा उपासना की दृष्टि से तीन प्रकार के यज्ञ होने का उल्लेख किया है। (वैदिक सम्पत्ति, पं. रघुनन्दन शर्मा, पृष्ठ-229)

(ज्ञानयज्ञ तथा उपासनायज्ञ तो स्वाध्याय तप एवं योग आदि है, किन्तु श्रौत स्मार्त यज्ञ ही कर्मयज्ञ हैं) अन्य कई विद्वानों ने आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक-ये तीन प्रकार के यज्ञ कहे हैं। (कृष्ण यजुर्वेद एक अध्ययन, डॉ. वीरेन्द्र कुमार मिश्र, पृष्ठ 27)

आधुनिक विद्वानों ने प्रयोगभेद से लिखा है कि 'यज्ञों को पाँच वर्गो में रखा जा सकता है- होम, इष्टि, पशुयाग, सोमयाग तथा सत्र। (गोपथ ब्राह्मण, 1.5.7)

द्रव्य यज्ञ, योग यज्ञ एवं ज्ञान यज्ञ का त्रिवेणी संगम यज्ञमहोत्सव

आर्य समाज सांताक्रुज़, मुम्बई का मासिक मुखपत्र
वर्ष : ११ अंक–०२ (फरवरी – २०२०)

- दयानंदाब्द : १९५, विक्रम सम्वत् : २०७६
- सृष्टि सम्वत् : १,९६,०८,५३,११९

प्रबन्ध संपादक : चन्द्रगुप्त आर्य
संपादक : संगीत आर्य
सह संपादक : संदीप आर्य
कार्यकारी संपादक : विनोद कुमार शास्त्री, लालचन्द आर्य, रमेश सिंह आर्य, यशबाला गुप्ता.

विज्ञापन की दरें : शुल्क
— पूरा पृष्ठ : रु. ३,०००/– — एक प्रति : रु. ९/–
— १/२ पृष्ठ : रु. २,०००/– — वार्षिक : रु. १००/–
— १/४ पृष्ठ : रु. १,५००/– — आजीवन : रु. १०००/–
— विशेषांक की दरें भिन्न होंगी ।
वर्गीकृत विज्ञापन

रु. १०/– प्रति शब्द, न्यूनतम रु. ५००/–
चैक/डीडी/मनी आर्डर आदि 'आर्य समाज सान्ताक्रुज' के नाम से ही भेजें, मुंबई के बाहर के चैक न भेजे। विज्ञापन सामग्री १० तारीख तक भेजें। **'नूतन निष्काम पत्रिका'** का मुद्रण ऑफसेट विधि से होता है।

पता : आर्य समाज सांताक्रुज़
(विठ्ठलभाई पटेल मार्ग) लिंकिंग रोड, सांताक्रुज़ (प.), मुंबई –५४. फोन : २६६० २८००, २६६० २०७५

अनुक्रमणिका	पृष्ठ सं.
यज्ञ के भेद-प्रभेद	२
सम्पादकीय	३
सुखस्य मूलं ब्रह्मचर्यम्	४
आनन्द और सुख	५
विचार शक्ति का चमत्कार	६
"महर्षि जी का पूरा जीवन सत्यपर आधारित था"	७
"ईश्वर प्रदत्त मनुष्य की विशेषताएँ"	८
सचल भाष के परिनिर्माण-वाणी-....	९-१०
प्रसिद्ध भजनोपदेशक कुंवर सुखपाल आर्य का निधन	११
अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें	१२
वैदिक मिशन मुम्बई/निमन्त्रण पत्र	१३
आत्मविश्वास	१४
आर्य समाज सान्ताक्रुज़ का ७६ वाँ वार्षिकोत्सव..	१५-१६

सम्पादकीय * पहले स्वयं सुधरें फिर विश्व को सुधारें *

मनुष्य समाज की सबसे छोटी इकाई है। मनुष्य की इच्छा सदा बनी रहती है कि वह समाज को सुधारें, राष्ट्र को सुधारें और अंततोगत्वा विश्व को सुधारें। किंतु यह सुधार कहीं भी स्पष्ट दृष्टिगोचर नहीं हो रहा है। इसका एकमात्र कारण यह है कि हम स्वयं सुधार की स्थिति में नहीं पहुंच पाए हैं। माता पिता को यह शिकायत रहती है कि बच्चे उनकी बात नहीं सुन रहे हैं बच्चे माता पिता के गलत व्यवहार को देखकर उनकी शिक्षाओं कि उपेक्षा कर देते हैं। गुरु जब तक स्वयं गुड़ खाने की आदत को नहीं छोड़ता तब तक शिष्यों पर भी उसके गुड़ से परहेज़ वाले व्याख्यान का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। इसीलिए सबसे प्रथम हमें स्वयं को सुधारना होगा तभी हम विश्व को सुधारने में सक्षम हो सकेंगे।

अमेरिका के प्रधान सेनापति जॉर्ज वाशिंगटन एक बार किसी जंगल में घूम रहे थे कि उसने एक लकड़हारे को लक्कड़ उठाने में असमर्थ देखा और उसने देखा कि उसके समीप खड़ा सिपाही घोड़े पर ही बैठा हुआ है। तब जॉर्ज वाशिंगटन ने स्वयं अपने हाथों से लकड़हारे की मदद की और जाते-जाते उसने लकड़हारे को कहा कि भविष्य में कभी भी ऐसा कोई काम पड़े तो आप प्रधान सेनापति जॉर्ज वाशिंगटन को याद कर लेना। यह सुनते ही सेनापति पानी पानी हो गया, उसे अपनी भूल का बोध हो गया और वह जॉर्ज के चरणों में झुक गया। यह तरीका है व्यक्ति सुधारने का। सुधार करने की क्रिया अपने से ही प्रारंभ होती है। किंतु आज यह क्रम विपरीत चल रहा है। अपने सुधार की बात गौण रहती है परन्तु औरों के सुधार की अपेक्षाएं अत्यधिक प्रबल होती है। इसप्रकार सुधार का मार्ग प्रशस्त नहीं हो सकता। व्यक्ति-सुधार समाज-सुधार की सुदृढ़ नींव है और व्यक्ति एवं समाज सुधार की अंतिम निष्पत्ति होती है राष्ट्र सुधार। व्यक्ति और राष्ट्र की इस सापेक्षता से ही मानव जाति का अभ्युदय संभव है अन्यथा नहीं।

सन्दीप आर्य
मो.: ९९६९ ०३७ ८३७

सुखस्य मूलं ब्रह्मचर्यम्

ब्र. विशाल आर्य (शास्त्री)

ओं ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत्
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्य: स्वराभरत। (अथर्व 1.5.16)
अर्थात् ब्रह्मचर्य (इन्द्रिय दमन, वेदाध्ययन) तथा तप से विद्वान लोग मृत्यु को (मृत्यु के कारण निरुत्साह निर्बलता आदि को) नष्ट कर देते है। ब्रह्मचर्य (नियमपालन) से सूर्य या आत्मा ने सब पदार्थो या इन्द्रियों के लिए सुख अर्थात् प्रकाश को धारण किया है।

प्र. ब्रह्मचर्य क्या है?

उत्तर- जब तक इसे ठीक-ठाक न समझ लिया जाये तब तक इससे पूर्ण लाभ उठाना और ब्रह्मचर्य की रक्षा करना असम्भव है। ब्रह्मचर्य यह दो शब्दों से बना है,

1. ब्रह्म इसका अर्थ है- ईश्वर, वेद, ज्ञान और वीर्य आदि।
2. चर्य इसका अर्थ है- चिन्तन, अध्ययन, उपार्जन, रक्षणादि।

हमारे ऋषि मुनियों ने ब्रह्मचर्य की तपस्या के बल पर ही मृत्यु पर विजय प्राप्त की थी। किसी अंग्रेजी लेखक ने ब्रह्मचर्य के ऊपर वर्णन करते हुए लिखा है कि

"Brahma charya is life and senuality is death"

अर्थात ब्रह्मचर्य ही जीवन है तथा वीर्य नाश ही मृत्यु है।

जिस प्रकार तिलों से तेल निकाल दिया जाए तो पीछे खल ही अवशिष्ट रहती है, उसी प्रकार यदि मानव शरीर से वीर्य निकाल दिया जाए तो वह निरुत्साह, निर्मलता आदि मानसिक व शारिरीक रागों से ग्रस्त हो जाते है। जिस प्रकार दीपक में तेल होने पर ही जलता है उसी प्रकार मानव शरीर में सुरक्षित वीर्य होने पर उसकी ऊर्ध्वगति होकर प्रखर बुद्धि, बलवान, शूरवीर साहसी गम्भीर धैर्यवान्, इत्यादि गुण प्राप्त होते हैं।

संसार में देखा जाए तो बल तीन प्रकार का होता है-

1. शरीर का बल
2. ज्ञान का बल
3. मन का बल

इन तीनों बलों मनोबल अर्थात् आत्मबल सबसे श्रेष्ठ बल है। यदि हममें शरीरबल ज्ञानबल होगा तो मनोबल अपने-आप हम में उत्पन्न हो जायेगा।

रसाद्रकां ततो मांस मांसान्मेदा प्रजायते।
सदस्याऽस्तित ततो मज्जा, मज्ज्या शुक्र संभव:।। (श्री सुश्रुताचार्य)

मनुष्य जो कुछ भोजन करता है वह प्रथम पेट में जाकर पचने लगता है और उसका रस बनता है। उस रस का पाँचदिन तक पाचन होकर उससे रक्त पैदा होता है। रक्त (खून) का भी पाँच दिन तक पाचन होकर उससे मास बनता है। पाचन की यह क्रिया एक सेकण्ड भी बंद नही रहती है। इसी प्रकार पाँच दिन बाद माँस से मेदा, मेदा से अस्थि, अस्थि से मज्जा और मज्जा से सप्तम् सार पदार्थ वीर्य बनता है। फिर उस वीर्य का पाचन नही होता। यही वीर्य फिट औजस रुप में सम्पूर्ण शरीर में चमकता है। क्योकि-100 बूंद रक्त से एक बूंद वीर्य का निर्माण होता है।

वीर्य रक्षा का प्रताप-

176 वर्ष का ब्रह्मचारी भीष्म कुरुक्षेत्र के आँगन (मैदान) में वह घमासान युद्ध मचाता है कि प्रतिदिन 10-10 हजार सैनिकों को वीरगति प्राप्त कटता है ऐसी अवस्था देख सारा पाण्डव-दल तक घबरा जाता है।

सच्चे ब्रह्मचारी युगप्रवर्तक महामानव दिव्य दयानन्द का आदर्श जीवन भी हमारे सन्मुख है। वे भी आजीवन ब्रह्मचर्य रहें। अरे ऋषि दयानन्द को उनके विरोधियों ने सोलह बार विष दिया पर अन्तिम बार जोधपुर में नन्ही जान नामक वैश्या के कहने पर स्वामीजी के सेवक नीच जगन्नाथ ने दूध में कॉच व विष मिलाकर महर्षि दयानन्द को पिला डाला। तब स्वामी जी के शरीर से विष फूट - फूटकर में दास्यभाव से विचरण कर रहे है। कहाँ हमारे वीर्यवान् सामर्थ्य सम्पन्न पूर्वज और कहाँ हम उनकी निर्वीर्य और पद-दलित दुर्बल संतान ओह! कितना यह आकाश -पाताल का अन्तर हो गया है। हमारा कितना भयङ्कर पतन हुआ है? इसमें थोड़ा-सा भी संदेह नहीं कि हमारा जो यह भीषण पतन हुआ है? जिसका एक मात्र कारण ब्रह्मचर्य का ह्रास ही है।

अत: हमें सदैव अष्टमैथुन से बचना चाहिए। क्योंकि वीर्यनाश करने वालों के लक्षण दूर से व्यक्ति में दिख जाते है, जैसे आँख व गाल अन्दर धँस जाते हैं, और गाल की हड्डिया खुल जाती है। बाल पकने लगते है। रात्रि में स्वप्नदोष का होना इत्यादि लक्षण ब्रह्मचर्य हनन करने वालों के दिख पड़ते है। सबसे बड़ी बात यह कि तरुणावस्था आने से पूर्व ही वृद्धावस्था सा प्रतीत होने लगता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने कालजयी अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में तृतीय समुल्लास में ब्रह्मचर्य के तीन प्रकार बताए है-

1) कनिष्ठ ब्रह्मचर्य (24 वर्ष तक विवाह)
2) मध्यम ब्रह्मचर्य (44 वर्ष तक विवाह)
3) उत्तम ब्रह्मचर्य (48 वर्ष तक विवाह)

और फिर स्वामीजी द्वितीय समुल्लास में लिखते हैं। 'देखो जिसके शरीर में सुरक्षित वीर्य रहता है तब उस को आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम बढ़ के बहुत सुख की प्राप्ति होती है। और जिसके शरीर में वीर्य नहीं होता वह नपुंसक महाकुलक्षणी और जिसको प्रमेह रोग होता है, वह दुर्बल निस्तेज, निर्बुद्धि, उत्साह, धैर्य, बल, पराक्रमादि गुणों से रहित होकर नष्ट हो जाता है।

ब्रह्मचर्य महिमा-

1. सुखस्य मूलं ब्रह्मचर्यम्।
2. बलस्य मूलं ब्रह्मचर्यम्।
3. विद्याया मूलं ब्रह्मचर्यम्।
4. आरोग्य मूलं ब्रह्मचर्यम्।

कर्मणा मनसा वाचा सर्वावस्थासु सर्वदा।
सर्वत्र मैथुनत्यागो ब्रह्मचर्य प्रचक्षते ।। याज्ञवल्क्य संहिता

सर्व अवस्था में मन, वचन और कर्म, तीनों द्वारा सदैव मैथुन का त्याग ही ब्रह्मचर्य कहलाता है।

हमारे गुरुकुलआबू पर्वत में आजीवन ब्रह्मचारी परमपूज्य आचार्य महीपाल जी गुरुकुल के विद्यार्थियों को उपदेशामृत का पान कराते हुए अपनी अमृतवाणी से कहते है कि- ब्रह्मचर्य जीवन का हीरा हैं।

उसकी रक्षा करते हुए मर जाना ठीक है, परन्तु उस पर ऑच नही आनी चाहिए। उससे बढ़कर संसार में मेरे लिए कोई प्रिय वस्तु नही है। शुभ-कर्मो के सहारे ही मनुष्य सुखी हो सकता है, अन्यथा नहीं।

अब अन्त में मैं एक बात बताकर अपनी लेखनी को विराम देना चाहता हूँ मरण बिन्दुपातेन जीवनं बिन्दु धारणात् अर्थात् बिन्दुनाथ (वीर्यनाश) ही मृत्यु हैं और बिन्दुरक्षण (वीर्यरक्षण) ही जीवन है।

।। इति ।।

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय देलवाडा, आबूपर्वत
जिल्हा-सिरोही (राजस्थान) पिन : 307501
मो. : 9414589510 / 8005940943

आनन्द और सुख हमें कैसे प्राप्त होगा

अपर्णा शुक्ला

प्रातर्जितं भग भुग्रं हुवेम वयं पुत्र मदि ते र्यो विधर्ता घ्रश्चिद्यं मान्यमानस्तु रश्चि दाजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह

ऋक् मं. 7 सू. म.-2

परम पिता परमेश्वर को प्राप्त करना प्रत्येक आत्मा का अन्तिम लक्ष्य है। परम उद्देश्य है। क्यों कि प्रभु पिता आनन्द स्वरुप है। प्रत्येक प्राणी, प्रत्येक आत्मा स्वभावत: सुख चाहती है! आनन्द की चाह और ललक सब में एक जैसी ही है! आनन्द और सुख वास्तव में हमें कैसे प्राप्त होगा? यह जानना अत्यन्त आवश्यक है।

जैसे हमारे सामने एक बहुत विशाल सागर है। उस सागर के परे हमारी अभीष्ट वस्तु धरी है! उसे प्राप्त करना मान लीजिए हमारा लक्ष्य है! अब हम चौवीसों घण्टे उस वस्तु का नाम जपने लगें! हर समय उस वस्तु का ही ध्यान करते बैठें तो क्या वह वस्तु हमें मिल जायेगी कदापि नहीं। क्यों कि वस्तु विशाल सागर के उस पार धरी है हम इस पार खड़े हैं। वस्तु को प्राप्त करने के लिए सागर को पार करना आवश्यक है। कोई सागर को पार करने की बजाय केवल इस पार बैठे बैठे ही उस वस्तु को पा लेना चाहे तो यह संभव नहीं है!

यह संसार एक समुद्र है! इस संसार रुपी समुद्र को पार करके ही हमें प्रभु प्राप्त हो सकते हैं। केवल प्रभु के नाम का जाप केवल प्रभु का ध्यान करने भर से प्रभु की प्राप्ति संभव नहीं है।

प्रभु को पाने से पहले संसार को समझना होगा। संसार को पार करने का उपाय ढूंढ़ना होगा। प्रभु हमारे लक्ष्य है उन्हें सदा स्मरण रखना ही होगा। सदा स्मरण रखना ही उनका जप है। उनके स्मरण के साथ साथ इस संसार को पार करने का उपाय जानना जीवन को सही ढंग से जीने का तरीका जानना और उस पर आचरण करना भी उतना ही आवश्यक है जितना प्रभु की स्मरण रखना। आज हम जीने के तरीके को अर्थात् संसार सागर को पार करने की विद्या को निसारते चले जा रहे हैं। प्रात: कालीन इन मंत्रों का एक एक शब्द हमें प्रभु पिता का स्मरण कराता है। पर साथ ही हमें जीवन को सही ढ़ंग से जीने की प्रेरणा भी देता जाता है।

सागर को तैरने तरीके की उपेक्षा करके हम सागर के परे की वस्तु पा लेंगे सोचने का विचार एक भ्रान्ति है। इसीलिए योगेश्वर कृष्ण ने कर्मोपासना पर बल दिया है। महर्षि देव दयानन्द ने भी अपने जीवन से कर्मोपासना का सन्देश दिया है। आचरण पर बल दिया है।

पर आज हम आचरण को विसार रहे हैं। आचरण एक अनिवार्य शर्त है प्रभु पिता को प्राप्त की। प्रात: काल के इन मंत्रों में प्यारे प्रभु का स्मरण है ही और प्रभु का स्मरण भी आवश्यक है पर उस स्मरण से भी अधिक मंत्रों में प्रात: काल शीघ्र उठने और उठकर किए जाने वाले नियमों फलों और कर्तव्यों पर ध्यान देना भी उतना ही आवश्यक है।

इन मंत्रों का आध्यात्मिक अर्थ तभी प्रकट होगा जब कि हम इसके भौतिक अर्थ को जानकर उस पर आचरण करें!

प्रभु पिता के बल प्रात: ही स्मरण है या प्रभु का प्रात: काल से कोई विशेष नाता है ऐसी बात नही है। ये तो कालातीत हैं। काल का महत्त्व तो हमारे लिए है। मन्त्र में वारंवार प्रात: प्रात: शब्द दोहराने का मुख्य उद्देश्य प्रभु पिता द्वारा प्रस्त ज्ञान वेद के इन मंत्रों का उद्देश्य हमारे समक्ष प्रात: काल उठने पर बल देना मात्र है।

'प्रातर्जितं' जो प्रात: काल उठ कर ताजे व शान्त मस्तिष्क से धर्म के पालन और अर्थ जुटाने पर विचार करेगा उसे धर्म और अर्थ के सिद्धि होगी। इसी लिए कहा है कि ''प्रात:काले कध्येत धर्मार्थौ चानु चिन्त येत्।'' प्रात: काल शीघ्र उठो। नित्यकर्म करके अग्नि और वायु का सेवन करो! सब नित्य कर्म करके प्रभु का स्मरण करते हुए धर्म अर्थ का चिन्तन करो कि आज में कौन कौन से परोपकार के कार्य करूँगा और साथ ही साथ अर्थ का संचय करूँगा अर्थात् परोपकार के लिए धर्म करने के लिए साधन भी जुटाऊँगा।

जो प्रात: काल के शान्त शुद्ध स्वस्थ ताजे वातावरण में अपने आचरण और कर्तव्य का विचार करेगा उसे अपने कार्य में सफलता मिलेगी। ''प्रात र्जित'' जो प्रात: काल की वेळ में धर्म और अर्थ का चिन्तन कर विचार पूर्वक कार्य करता है सफलता उसके चरण चूमती है। भगं-उग्रं उस सूर्य की तेजस्विता रुप जो शारीरिक ऐश्वर्य है उसकी संप्राप्ति होती है। शारीरिक तेजस्विता क्या है? शरीर के स्फूर्ति और बल का होना साथ ही ज्ञानेन्द्रिऐं में सक्षमता और सामर्थ्य अर्थात् वर्चस्विता भी बढ़ती है। प्रात: काल ब्रह्म मुहूर्त में जागने के ही परिणाम कितने सुखद और लाभ प्रद होते हैं। यह सूर्य हमारे पिता के समान है! जैसे पिता अपने पुत्र का पालन पोषण व प्राण रक्षा करता है वैसे ही यह सूर्य भी हमारा पालन पोषण व रक्षण करता है। इसीलिए कहा है सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुश्च यह सूर्य ब्रह्माण्ड और पिण्ड में निरन्तर गति का संचार करता है। जिस प्रकार धरती हमारी माता है। जब सृष्टि का आरंभ हुआ ब्रह्माण्ड का निर्माण हुआ तब यह प्राणी जगत् धरती के ही गर्भ से अमैथुनी सृष्टि के जन्म लेता है अत: धरती हमारी माॅ है, धरती में गर्भ की स्थापना सूर्य के ही माध्यम से होती है अत: भग सूर्य हमारा अधि दैविक पिता है सूर्य प्रभु बनाया हुआ एक अद्भुत निर्माण है। य: जो सूर्य ''वि धर्ता'' अपने मंडल के लोक लोकान्तरों को विशेष रुप से धारण किए हुए है। हमारे वैज्ञानिक भाइयों की यह धारणा नितान्त भ्रम मूलक है कि सृष्टि के आरंभ में सूर्य का एक खण्ड हुए और वह धीरे धीरे धरती बन गया। शास्त्रों में वेद में सूर्य को अदित्य कहा है। सूर्य खण्डित नहीं होता। इसीलिए उसे अदित्य अर्थात अखण्डनीय कहा जाता है। ''आधुश्चित्'' जो सूर्य हमें चारों और से धारण किए हुए है। वह सूर्य ''तुरश्चित'' पिण्ड और ब्रह्माण्ड के नाना प्रकार के दोषों का निवारण करने हारा है। दोषों को नष्ट करने वाला है।

हम लोग इस सूर्य को राजा के समान मानते हुए निरन्तर उदय और अस्त हो ते समय उसका भक्षण किया करें सेवन किया करें।

यह वेद के माध्यम से दी हुई उस परम पिता परमेश्वर की आज्ञा है। उस प्यारे प्रभु का आदेश है। इति आह -इस प्रकार कहा है।

प्रभु की भक्ति प्रभु की सच्ची उपासना उनके आदेश का पालन करना है! जो उनके आदेश का पालन नही करता वही नास्तिक है। वही वेद निन्दक है।

यह जान लेना चाहिए कि-जो ब्राह्ममुहूर्त के समय सोता रहता है वह प्रभु का भक्त नही कहला सकता। अपनी उन्नत्ति और अपने वंश की उन्नति के लिए दृढ़ता से निश्चय करो कि अब हम भविष्य में प्रात: काल चार बजे नियम पूर्वक जाग जाया करेंगें।

चाहे कितने ही मन्त्र पढ़ लो चाहे मन्दिर में जाकर कितने ही नारियल फोड लो चाहे दिन भर में कितनी ही बार नमाज पढ़ लो चाहे चर्चो में जाकर प्रेयर करते रहे। चाहे गुरुग्रन्थ साहब का अखण्ड़ पाठ करते रहो। इससे कुछ नही होगा। यदि परमात्मा की सच्ची भक्ति करना चाहो तो उस अपने प्यारे पिता के आदेशों का श्रद्धा पूर्वक पालन करो। हम चाहे कितना ही पढ़ लें कितनी बड़ी उपाधिया अर्जित कर लें। उससे कोई लाभ नही होगा। आचरण करना होगा। जब हम पढ़े हुए या जाने हुए ज्ञान के अनुरुप आचरण करते है तभी हम ज्ञान के फल को प्राप्त कर सकते हैं। प्यारे परिवार के बूढ़ो युवको और बच्चो जीवन को सही ढ़ंग से जीने का तरीका सीखो। ज्ञान पर आचारण करना ही उसे पढना है।

यदि हम आचरण नही करते है तो एक ज्ञान एक स्वाध्याय हमारे लिए सुख नहीं उपजा सकता। अत: आज से संकल्प करो कि हम जो, कुछ सत्य जान लेगे उस पर आचरण भी करेंगें तो स्मरण रखो कि तुम्हारे चारों और सुख ही सुख होगा।

* पुस्तक समीक्षा *

आर्य समाज के संस्थापक एवं वेदोद्धारक

महर्षि दयानंद सरस्वती जी के तीन प्रमुख एवं प्रसिद्ध ग्रंथ हैं-- ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, संस्कार विधि एवं सत्यार्थ प्रकाश। मानव जीवन के विकास के लिए एवं मुक्ति मार्ग पर प्रशस्त होने के लिए इन ग्रंथों का स्वाध्याय अति आवश्यक है। अतः हर व्यक्ति को अपने जीवन काल में इन तीनों ग्रंथों का पठन पाठन अवश्य करना चाहिए। आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान तथा वैदिक मिशन मुंबई के अध्यक्ष **डॉ. सोमदेव शास्त्री** जी ने इन तीनों ग्रंथों का सार अपनी पुस्तक **बृहतत्रयी संदेश** में भर दिया है। डॉ सोमदेव जी ने अब तक अनेक पुस्तकों का लेखन का कार्य किया है जो आर्य जगत में अत्यंत लोकप्रिय एवं लाभदायक साबित हुई। 'बृहतत्रयी संदेश' उसी श्रृंखला की 36 वीं कड़ी है। जो व्यक्ति समय अभाव के कारण ऋषि के उक्त तीन ग्रंथ पढ़ने में अपने आपको असमर्थ पाते हैं, वे इस पुस्तक से लाभ उठा सकते हैं। क्योंकि इसमें लेखक ने अत्यंत सरल भाषा में और संक्षिप्त रूप में तीनों ग्रंथों का निचोड़ भर दिया है। इस पुस्तक को सरल रूप देने हेतु अनेक विषयों को भिन्न-भिन्न अध्याय में विभाजित कर दिया है और प्रत्येक अध्याय के अंत में लेखक ने प्रश्नावली भी प्रस्तुत की है ताकि पाठक गण स्वयं उन प्रश्नों का उत्तर ढूंढे और ज्ञान की वृद्धि करने में सफल हो सकें। हमें पूर्ण विश्वास है कि इस पुस्तक को पढ़कर पाठकगण आशातीत लाभ उठा सकेंगे।

सन्दीप आर्य
मंत्री- आर्य समाज सांताक्रुज, मुंबई
मो0 9969037837

समाचार

* गुरुकुल सम्मेलन *

वैदिक मिशन मुंबई दिनांक 20, 21, 22 मार्च 2020 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा मुंबई के सौजन्य से पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल, प्रताप नगर, चित्तौड़गढ़, राजस्थान में गुरुकुल सम्मेलन का आयोजन करने जा रहा है। जिसमें वैदिक सिद्धांतों का गहन अध्ययन, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का पारिवारिक सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास में योगदान, आर्ष पाठ विधि का संरक्षण, गुरुकुलुओं का संगठन आदि विषयों पर गहन चिंतन किया जाएगा।

इस सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि के रूप में स्वामी प्रणवानंद जी, स्वामी आर्यवेश जी, सुरेश जी आर्य, स्वामी धर्मानंद जी, डॉ रूप किशोर, श्री अशोक आर्य, श्री विठ्ठलराव आर्य, श्री प्रकाश आर्य व श्री विनय आर्य आदि महानुभाव उपस्थित रहेंगे।

कृपया इस अवसर पर आप अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

डॉ. सामदेव शास्त्री
अध्यक्ष वैदिक मिशन मुंबई
9869668130

विचार शक्ति का चमत्कार

(दु:ख के कारण-विचारों का अटकाव)

प्रिय पाठकों

''दुर्भावना, द्वेष, दुर्व्यसन, दुर्व्यवहार और अंत में दु:खों को पाना। यह सारे शब्द 'दु' अक्षर से प्रारंभ हो रहे हैं 'दु' का अर्थ है दो यानि जब विचारों को दो दिशाओं मिलती हैं यानि जब एक बार में दो विचार आते हैं तब भटकाव पैदा होता है। मानसिक भय तथा तथा मानसिक असंतोष कारण शरीर के आधारभूत हैं यानि बिना इनके हमारी शक्तियॉं. जिसमे विचार शक्ति प्रमुख है, हमे मनो वॉंछित फल देनें में असमर्थ हो जाती हैं। और इस सुखों से व आनंद से दूर हो जाते हैं। मानसिक रुकावट यानि जो हम चाहते हैं वह सोच नहीं पाते चीजों को समझ नहीं पाते अस्वीकार का भाव प्रबल रहता है। इससे विरोधाभास पैदा होता है और फिर भटकाव व अस्थिरता जीवन में आती है। भय जीवन को चलाने की ऊर्जा है। अज्ञात भय हमे दौड़ाता रहता है। जो कुछ भी हमारे पास है उसे खोने का भय सदा बना रहता है। जैसे की धन दौलत, किसी का प्यार, मान-सम्मान, कीर्ति-यश । यानि अच्छाईयों को खोने के भय से बुराईया को जाने अनजाने में अपना लेते हैं। यदि बुराईया से भय करना सीख लिया तो हमें जीवन में अच्छाईयों को पाने में कोई नहीं रोक सकता। और अंत में आता हैं असंतोष। हमारी वर्तमान स्थिति हमारे गुण, कर्म, स्वभाव के अनुरुप होती है। जैसे ही इसमें असंतोष उत्पन्न होता है, जीवन में भटकाव व अस्थिरता आ जाती है। होना यह चाहिये कि जो कुछ भी हमारे पास है उसमे संतोष प्राप्त करना और फिर उन्नति के मार्ग पर प्रसशस्त हो जाना । जीवन उसी का चलता रहता है जिसके विचार चलते रहते हैं और जो जीवित चित्त के साथ जीता है यानि चित्त मे उत्साह प्रसन्नता, दिलचस्पी हमेशा बनी रहनी चाहिए। घटना घटित होने से पूर्व ही हम अपनी मानसिकता को अपने विचारों से बांध देते हैं और हकीकत से सदा ही दूर रहते हैं। शेष अगले अंक में। धन्यवाद!

राजकुमार भगवतीप्रसाद गुप्त,
आर्य समाज (वाशी).

"महर्षि जी का पूरा जीवन सत्यपर आधारित था"

खुशहालचन्द्र आर्य

बरेली की सभा में गणमान्य लोग जैसे कलेक्टर, कमिश्नर उच्च अधिकारी उपस्थित थे। ऋषिजी ने बड़ी निर्भीकता से व्याख्यान देते हुए कहा-लोग कहते है- सत्य को प्रकट न करो, सत्य कहने से कलेक्टर कमिश्नर नाराज और अप्रसन्न होंगे, गवर्नर पीड़ा देगा। ऋषि दयानन्द ने उच्च स्वर से कहा, चाहे चक्रवर्ती राजा क्यों न नाराज हो, हम तो जैसा है, वैसा ही सत्य कहेंगें। चाहे लोग अंगुलियों को मोमबत्ती बनाकर जलाएँ, चाहे मुझे तोप के मुख के सामने खड़ा कर दें फिर भी मेरी वाणी से सत्य ही निकलेगा। ऋषि जी ने जीवनभर गलत बातों, ढोंग, पाखण्ड, मूर्तिपूजा, अवतारवाद आदि से समझौता नहीं किया। यदि किया होता तो वे उन्नीसवीं शताब्दी के सबसे बडे भगवान होते, उनका व्यक्तित्व तो अद्वितीय गुणों तथा यौगिक सिद्धियों से परिपूर्ण था। मगर वे इतने महान् व निरहंकारी थे, सदा साधारण मानव बनकर ही पूरा जीवन निकाल दिया। आर्य जनों को ऋषि जी के प्रेरक जीवन से शिक्षा, प्रेरणा तथा सत्यपालन का व्रत लेना चाहिए। हम स्वार्थी लोभी, पद आदि के लिए कदम-कदम पर सिद्धान्त विरूद्ध बातों से समझौता करने के लिए तैयार हो जाते हैं। असत्य बातों से आत्मा को मलीन कर लेते हैं।

ऋषिवर को "सत्यमेय जयते नानृतम्" सर्वदा सत्य की जय और असत्य की पराजय होती है, इस पर पूर्ण विश्वास एवं आस्था थी। सत्य के लिये उन्होंने जीवन भर विरोध, अपमान, संघर्ष और जहर पीया। सत्य के लिए अकेले लड़े तथा अकेले ही विजय प्राप्त की। वे महान योगी, दार्शनिक, तपस्वी, त्यागी, सुधारक और भविष्य द्रष्टा थे। कभी भी अन्याय, अधर्म एवं असत्य के आगे नही झुके। उनकी वाणी में अदभुत शक्ति और प्रभाव था। वे सत्य के शोधक वक्ता, पालक, प्रचारक और अन्त में सत्य पर शहीद होने वाले निराले व विलक्षण महापुरुष थे। सचमुच ऋषिवर सत्य के देवदूत बनकर आये थे। आजीवन विषपायी रहे। हंस-हंस कर जहर पीते रहे। संसार की दुर्गति, अज्ञानता तथा मानव जाति के पतन पर रातों जागकर आँसू बहाते रहे। उनका सारा जीवन प्रेरणा तथा मार्ग दर्शक रहा।

अमृतसर व्याख्यान में पत्थरों की वर्षा हुई। महर्षि हंसे और बोले - यह फूलों की वर्षा है। अपने विषदाता को यह कहकर मुक्त कर दिया- मैं दुनियाँ को कैद करने नहीं, कैद से छुडाने आया हूँ। दुष्ट यदि अपनी दुष्टता नहीं छोडते हैं तो हम अपनी श्रेष्ठता क्यों छोड़े? महापुरुषों के जीवन की घटनाएँ, व्यवहार, तप, त्याग, बलिदान आदि संसार को प्रेरणा, चेतना, गति और जागरूकता देते हैं।

सदियों के बाद वह पुण्यात्मा संसार को जगाने आई थी। महर्षि दयानन्द जैसा क्रान्तिकारी, निष्काम कर्मयोगी, देशभक्त, निर्भीक वक्ता, संसार को सत्य और शान्ति का सन्देश देने वाला दूसरा महापुरुष इस संसार में मिलना दुर्लभ है। दुर्भाग्य है कि महर्षि दयानन्द का संसार में जो मूल्यांकन, महत्व, सन्मान व स्थान होना चाहिये था, वह मिला नही। लोगों ने उस महायोगी को पहिचाना नही, उन के बताए मार्ग पर संसार नहीं चला। उनके सिद्धान्तों, विचारों, आदर्शों आदि पर अमल नही किया गया। यदि किया होता तो आज देश व दुनियाँ की यह दुर्गति, दुर्दशा, दुःख, दैन्य, भ्रष्टाचार, अनाचार आदि न देखने पड़ते। ऋषि जी के विचार चिन्तन सोच व आदर्श बहुजनहिताय और बहुजनसुखाय की भावना से ओत-प्रोत था।

गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स, १८० महात्मा गान्धी रोड,
(दोतल्ला) कलकत्ता-७००००७ मो. ९८३०१३५७९४

बलात्कार-कारण और निवारण

पिछले 15 से बीस वर्षों में भारत वर्ष में बलात्का की घटनाएं बढ़ी हैं। यहां तक कि कुछ महीने की बच्चियों के साथ भी बलात्कार हो रहे हैं। इस का कारण क्या है?

कारण हैं चारों और कामुकता का वातावरण सिनेमा में छोटे छोटे कपड़ों में नृत्य। किसिंग सीन गंदे गीत। टीवी धारावाहिकों में भी अधिकतर धारावाहिक अश्लीलता ही परोस रहे हैं। धारावाहिक भाभीजी घर पर हैं' में दो प्रमुख पुरुष पात्र एक दूसरे की पत्नियाँ पर डोरे डालने में लगे हुए हैं। फिल्मों मे 'मुन्नी बदनाम हुई' और 'चिकनी चमेली' जैसे छोटे छोटे कपडो में कामुक नृत्य वातावरण को दूषित किये हुए हैं। रही सही कसर इंटरनेट ने पूरी कर दी है। वाच पार्टीज़ के नाम पर पुरुष और स्त्री को संभोग करते हुए दिखाया जा रहा है। हमारी भारतीय युवतियां पाश्यात्य युवतियों की भांति छोटे छोटे कपडे पहनने में गर्व का अनुभव करती हैं। हमारे यहां यदि किसी कंवारी लड़की को ये कह दे कि यह तो गाय है; बडा अच्छा समझा जाता है या था। वही पाश्चात्य में ऐसी लडकी को 'स्टुपिड काऊ' ही कहते हैं। यदि किसी युवती को कोई ये कह दे कि 'यू आर ए बिट ऑफ ए बिच' तो वह मुस्कुरा कर और भी मटक कर चलने लगती है।

हम भारतवासी यह भूल गए हैं कि हमारी सभ्यता और संस्कृति पाश्चात्य से भिन्न है। हमारे यहां विवाह से पूर्व प्रेम प्यार मे फंसना बुरा समझा जाता है। यहां तो लडके और लडकियों के गुरुकुलों में भी मीलों का अंतर रखा जाता था। पहला आश्रम ब्रह्मचर्य आश्रम कहलाता था। उस में 8 वर्ष की आयु से 25 वर्ष की आयु तक गुरुकुल में रह कर कठोर तप के साथ शिक्षा ग्रहण करनी होती थी। किन्तु अंग्रेजों ने हमारी इस उत्कृष्ट शिक्षा प्रणाली को तहस नहस कर डाला। उन्होंने को-एजुकेशन की दूषित शिक्षा प्रणाली हमारे मध्य चला दी। परिणाम यह हुआ कि स्कूल के
दिनों में ही लडके और लडकिया प्रेम प्रसंगों में फंसने लगे हैं।

हम भूल गए है कि हमारे मनीषियों ने मनुष्य जीवन के लिए चार पुरुषार्थ स्थापित किए हैं। वे हैं धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। धर्म अर्थात लौकिक और सामाजिक कर्तव्य, अर्थ अर्थात पैसा कमाना, काम अर्थात कामनाएं और मोक्ष अर्थात जीव का जन्म-मरन के बंधन से छूटना। यदि हम इस जीवन लक्ष्य को सम्मुख रखें, तो फिर ये विषैला कामुक वातावरण हमें सम्मोहित नहीं कर पाएगा। हमारे यहां वात्स्यायन का कामसूत्र भी है और हम ने वात्स्यायन को ऋषि भी माना है। संतान उत्पत्ति और आंगिक आनंद के लिए यह आवश्यक भी है। पर हमने कभी पाश्चात्य की भांति 'सैक्स इज़ नॉट सेक्रिड, सैक्स इज़ फन' नहीं माना।

मेरा कहना यह है कि हमारे युवक और युवतियां पाश्चात्य की अंधी नकल न करें। भारतीय युवतियां उन भारतीय सिने अभिनेत्रियों की नकल न करें जो पाश्चात्य सिने अभिनेत्रियों की तरह किसी अवार्ड फंक्शन में उपस्थित होने के लिए अपनी जांधे और उरोज दिखाती है। अंत में उर्दू के प्रसिद्ध हास्य और व्यंग्य कवि अकबर इलाहाबादी का एक शेर उद्धृत करता हूँ-

सभी मुझ से ये कहते हैं कि रख नीची नज़र अपनी
कोई उन से नहीं कहता न निकलो यूँ अयाँ (जाहिर) होकर।

ईश्वर हमें सद्बुद्धि दे।

विजय 'अरूण'
फ्लोट नं.101,अ-वीग, विशामो, फ्लोट नं. 100, गोराई 2,
बोरीवली (वेस्ट) मुंबई-400091 मो. : 9892785994

"ईश्वर प्रदत्त मनुष्य की विशेषताएँ"

मनुष्य है उस ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति, जो है सर्वज्ञ और सर्व शक्ति मान।
ऐ भोला मानव! क्यों तू इधर-उधर भटकता, अपने स्वरूप को ले पहचान ||-1
मनुष्य है उसकी पृथ्वी पर सर्वोत्य व अन्तिम वृत्ति, जो है सर्वद्वितयारी व सर्वाधार।
ऐ मानव ! क्यों न तू सुकर्म करके, मोक्ष का अधिकारी बनता, तूही तो है मोक्ष का द्वार ||-2
ऐ मनुष्य! तूने किये थे पूर्व जन्म में अच्छे कर्म, तभी प्रसन्न हुआ वह सच्चिदानन्द!
अब ईश्वरीय ज्ञान वेदों पर चलने से ही बनेगा तेरा जीवन महान् और मिलेगा आनन्द ही आनन्द ||-3
ऐ मनुष्य! तुझे यह अनमोल जीवन मिला है। ईश्वर की न्याय व्यवस्था के अनुसार।
अब तेरा जीवन तभी सार्थक होगा, कर तू वेदाध्ययन, ईश्वर भक्ति और परोपकार ||-4
ऐ मानव! तेरा यह मानव जन्म, है तेरे ही किये पुण्य कर्मों का प्रतिफल।
इस जीवन को तू यों दो न गवां, शुभ कर्म करते हुए रख ईश्वर को याद हर क्षण हर पल ||-5
ऐ मनुष्य ! तेरे इस जीवन में वह ईश्वर देता है नि:शुल्क अग्नि, वायु, जल और अन्न।
तेरा कर्तव्य है उसी की कृतज्ञ भाव से कर उपासना और निष्काम कर्म करने में रख तू मन ||-6
ऐभाग्य ! तुझे यह पावन जन्म मिला, तेरे ही किये पुरुषार्थ और परिश्रम के बल।
तुझे भेजने का उद्देश्य यही है, अधिक पुण्य कर्म करके इस आवागमन से निकल ||-7
मनुष्य है कर्म और भोग योनि और धर्म करने में ईश्वर ने तुझे रखा है पूर्ण स्वतन्त्र।
बुद्धि और कार्य क्षमता विशेष दी, पर फल पाना तेरे हाथ नहीं, इस में है तू परतन्त्र ||-8
मनुष्य को बनाया सारी सृष्टि का उपभोक्ता, पर रखा उसे नियम व व्यवस्था के अधीन।
उसी के लिए यह सारा जगत रचा, पर जैसा करेगा वैसा ही फल पाने में रहता है पराधीन ||-9
ईश्वर ने मनुष्य पर किये इतने अधिक उपकार, बनाया पूरे जगत् का स्वामी।
फिर भी मानव तूँ इतना कृतघ्न है, कभी ईश्वर के गुण नहीं गाता, निकालता रहता है कमी ||-10
मनुष्य कहता रहता है, मुझे यह न दिया, वह न दिया, जब दे दिया उसको इतना सुन्दर शरीर।
आंख, कान, नाक, मुंह, हाथ और पैर, खाने के लिए अन्न और पीने के लिए नीर -11
ऐ मनुष्य! तू कृतघ्नता छोड़, बन कृतज्ञ, देता रह मन से सदा ईश्वर को धन्यवाद।
बनेगा तेरा जीवन सुखी, शरीर बनेगा स्वस्थ्य, मन होगा प्रसन्न और जीने में आवेगा स्वाद ||-12
जीवमात्र में होते हैं दो गुण, स्वाभाविक और नैमित्तिक जिनसे प्राप्त करता है ज्ञान।
पशु पक्षियों में स्वाभाविक गुण अधिक है, मनुष्य में होता नैमित्तिक गुण प्रधान ||-13
स्वाभाविक गुण जो जीवन चलाने के लिए ईश्वर देता है, अधिक पशु-पक्षियों में इसी से चलाते अपना काम।
नैमित्तिक गुण सीखाने से आता, जो मनुष्य में अधिक होता, इसी गुण से मनुष्य पाता है मोक्ष धाम ||-14
शुभ कर्मों के साथ, ईश्वर भक्ति में जो आनन्द आता, वह नहीं किसी में, कहता है "खुशहाल"।
गुण दोनों को कर्त्तव्य भाव से करते रहो, तो सुख, चैन आनन्द धन से बने रहोगे माला-माल ||-15

खुशहालचन्द्र आर्य
गोविन्द राम आर्य पण्ड सन्स, १८० महात्मा गान्धी रोड,
(दोतल्ला) कलकत्ता-७००००७ मो. ९८३०१३५७९४

"सचल भाष के परिनिर्माण-वाणी-वीणा-वाण-कृपाण"

आइए! पहले हँस ले, आगे तो रोना ही पड़ेगा। ग्राम्य परिवेश में बचपन खेल कूद के अविष्कारों से भरपूर रहता था। कच्चे किन्तु बड़े-बड़े मकान-दालान हुआ करते थे। बड़े और बच्चे सभी को बातचीत-गप्प-खेलकूद के लिए खूब समय मिल जाता था। दो बच्चे आपस मे बातचीत कर पहेलियाँ बुझा रहेथे। एक ने कहा मेरे बाबा का इतना बड़ा-इतना बड़ा दालान था कि जिसमें पूरा लोक समा सकता था। दूसरे ने कहा-मेरे बाबा के पास इतना लम्बा-इतना लम्बा बाँस था, कि जब चाहते थे, तब उस बाँस को ऊपर घुमाकर आसमान से पानी बरसा लेते थे। पहले ने प्रश्न किया कि वे इतने बड़े बाँस को रखते कहाँ थे। दूसरे बच्चे ने तपाक से उत्तर दिया। तुम्हारे बाबा के दालान में। तात्पर्य यह कि लम्बे चौड़े दालान-आगन बच्चों के खेलने के लिए खूब काम मे आते थे। गर्मी की दोपहरिंयाँ बड़ी लम्बी होती थीं। बच्चे खाली हो गयी दियासलाई की डिब्बियों में छेद करके उनमे डोरा बाँधकर दूरदूर से खूब बात करते व हँसते थे। उस समय उन्होंने टेलीफोन देखे नहीं होते थे किन्तु वे उसका भरपूर मजा लिया करते थे।

ऊँची शिक्षा के लिए बाहर निकले। बड़े-बड़े शहरों के कार्यालयों में भी यह सुविधा उपलब्ध नही थी। टेलीफोन नहीं टेलीग्राम से काम लिया जाता था। टेलीफोन आया, तो भी आप सीधे बात नहीं कर सकते थे। पहले नगर के टेलीफोन विनिमिय केन्द्र से बात करें, वहाँ से दूसरे नगर के केन्द्र से बात होती थी, वही वास्तविक उपभोक्ता से बात कराता था। आगे उसमें निर्माण परिनिर्माण होते चले गये। अब आप सीधे अपने इच्छुक व्यक्ति से बात करने लगे। अग्रिम विकास यहाँ तक होता चला गया कि आप बात करने वाले व्यक्ति से हँसते मुस्कराते हुए बात कर सकते हैं। लिखित सन्देश-चित्र-भुगतान-पावती सब आन लाइन कर सकते है। इस कर्ण-उपकरण का इतना भयानक विस्तार हो गया कि पात्र-अपात्र कुपात्र सभी इसका उपयोग से बढ़कर दुरुपयोग करने लगे। परिणाम स्वरुप हिंसा-अपहरण-दुराचार-अपराध, सभी सीमाओं नदियों की भयंकर बाढ़ के समान विध्वंसक होने लगे हैं। शिर्षक के शब्दों के क्रम पर आइए। पहले वाणी प्रारम्भ होती है। वही वाणी-वीणा सी सुरीली हो जाती है। व्यक्ति-स्त्री-पुरुष कोई भी क्यों न हो, कितने ही सैकड़ो किलो मीटर दूर रहता हो-वह धनुष के वाण भी भांति किसी भी परिवहन-साधन से उड़ता हुआ-अपने लक्ष्य, नहीं-आखिर तक पहुँच जाता है, और अन्ततः किसी एक पर कृपाण चल जाती है- वह अपना सबकुछ लुटाकर मृत्यु का शिकार हो जाता है।

– देव नारायण भारद्वाज

पहले दूर भाष स्वीकृत होने में महीना की प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। पहुँच बनानी पड़ती थी, तब कही मिलवाता था, खराब हो जाने पर भी यही प्रक्रिया अपनानी पड़ती थी। अब नर-नारी, नौकर-चाकर-जमादार- छात्र-अध्यापक-अधिकारी-कर्मचारी, जिसे देखो उसपर-एक नहीं चार-चार का अम्बारलगा मिला जायेगा।

जब मैं बाजार में जाता हूँ-बड़ी दुकान को छोड़ दीजिये सब्जी की दुकान पर कार से उतरकर बाबूजी खड़े होते हैं। सचल भाष से पत्नी से पूँछते हैं- कौन सी सब्जी लायें? ठेले पर अथवा दुकान पर-अमुक-अमुक सब्जियाँ रक्खी है। पैदल चलते देखता हूँ कि उसी प्रकार के सचल भाष से कोई किसी को बीभत्स गालियाँ दे रहा है। कोई कार या बाइकसे दूरभाष से बात करते हुए दुर्घटना ग्रस्त हो जाता है। कोई बालक माता-पिता की बात न मानते हुए इसी उपकरण पर व्यस्त रहता है और मन्द बुद्धि हो जाता है। परिवार में कष्ट का कारण बन जाता है। कितना कहा जाये। दिन प्रति दिन अखबार बताते रहते हैं आर्य नाम की संस्था, जिसके वैवाहिक प्रमाणपत्र वैधानिक मान्यता प्राप्त है, उसमें एक युवक आया, बाद में छिपते छिपते नगर की लड़की भी आ गई, धनराशि का भुगतान हो गया। यकायक पत्रकार वहाँ पहुँचे। शोर मच गया लड़की का परिवार पहुँच गया। अवैध विवाह होते होते बच गया। अलीगढ़ की एक अन्य लड़की बंगलौर के लड़के से मिलने निकल पड़ी रेलवेस्टेशन पर रात्रि में सुनसान शान्त प्लेट फार्म पर पुलिस ने पकड़ लिया। रहस्य पता चला। परिवार को बुलाया गया, जो उसे अपने साथ घर ले गया, और लड़की का जीवन विनष्ट होने से बच गया। अनेक उनहोनी घटिनाये ऐसी भी मिलती हैं, जिनमें विधर्मी लड़के नाम बदलते हुए मीठा मीठा बोल कर लड़कियों के जीवन को नष्ट कर देते हैं। हमारे परिचित लोकप्रिय मृदुभाषी, ज्ञान समृद्ध प्रोफेसर दम्पती के घर काम करने वाली युवती सेविका ऐसे लड़कों के कर में पड़कर उन लड़को द्वारा गृह स्वामिनी की हत्या की माध्यम बन गई। उसके, परिवार ने उसे छोड़ दिया और वह लड़की जेल में आजन्म कारावास भुगत रही है।

दूरभाष के माध्यम से न जाने कितनी अपसरायें स्वर्ग से उतरकर विश्वामित्र की तपस्या को भंग कर देती हैं। उनका एक उदाहरण प्रस्तुत है। इस प्रेम कहानी का आरम्भ नबंवर 2017 में हुआ। पैंसठ वर्ष की अमरीकी विधवा कैरन लिलियन नें भारत आकर 27 वर्ष के एम. ए. उत्तीर्ण राजमिस्त्री से विवाह किया। वापस चली गयी अग्रिम योजना भविष्य के गर्भ में निहित है। यह मधुरवाणी का ही परिणाम है

कि वह वाण की भीति उड़ती हुई आगयी। कृपाण की भूमिका का करिश्मा देखिये जिन्ना प्रकरण में जेल की हवा खा चुके अलीगढ़ के छात्रनेता अमित गोस्वामी को पाकिस्तान से मोबाईल फोन पर जान से मारने की धमकी मिली। एस एस पी.ने 'एस.पी. क्राइम'को प्रकरण की जॉच सौपी है। आक्रमक वार्ताकार ने यहॉतक धमकी दे डाली-उत्तर प्रदेश मे योगी सरकार कुछ नहीं कर पायेगी।

कैसे चली कृपाण, उसका सुनो बखान। शैलजा मूलत: अमृत सर पंजाब की रहने वाली थी। वे मिसेज इंडिया अर्थ 2017-18 की प्रतियोगिता के फाइनल में पहॅुचनेवाली प्रत्याशी रहीं थी। शैलजा ने एम: टेक के साथ भूगोल एम.ए. किया था। गुरुनानक विश्व विद्यालय में प्रोफेसर रहीं। इसके बाद वे एक एन. जी. ओ के साथ काम करने लगीं। मेजर अमित से 2011 में उनका विवाह हुआ और उन्होने परिवार के दायित्व सहर्ष संभाल लिये दिल्ली आने से पहले ही मेजर अमित ने शैलजा को मेजर निखिल से मोबाइल पर वीडियो काल करते देख लिया था। अमित ने शैलजा को निखिल से बात करने को मना कर दिया था। इसके बाद भी शैलजा नहीं मानी, तो अमित ने कईबार उसका विरोध किया। दिल्ली पुलिस को पता चला कि निखिल ने दो महीने मे 1300 काल शैलजा को की थीं। वह दिन मे बीस बीस बार फोन करता था। पुलिस को यह जानकारी निखिल की काल डिटेल से मिली। इसकी पुष्टि शैलजा की काल डिटेल से हुई। अमित के दबाव से कई बार शैलजा का निखिल से झगडा हुआ। निखिल उसे छोड़ने के तैयार ही नहीं था। उसने आगे बढ़कर शैलजा से शादि का प्रस्ताव रख दिया। अन्तत: शैलजा की हत्या हो गई और निखिल की खोज में पुलिस की छ: टोलियॉ लगाई गई हैं। वाणी से वीणा-वीणा से वाण वाण, से कृपाण की कहानी पूरी हो गई।

अलीगंढ के समीपस्थ क्षेत्रो में अनेकश: दुखान्त घटनायें घटी है। जिनकी कथा बहुत विचित्र है, लड़के-लड़की की वासनात्म हठधर्मिता वश कहीं कोई पिता, अथवा कहीं भाई प्यार से पाली बेटी को मौत के घाट उतार कर थाने मे लाकर समर्पण कर देत हैं। एक स्थान पर कमरे में बंद होकर एक ही साड़ी के छोर से बॅध कर एसे लटक जाते हैं कि एक जमीन पर लग जाता है दूसरा छत की ओर लटक जाता है, मजदूरी कर गुजारा करने वाला लड़का भी बातचीत से आकर्षित होकर उसको साथ लेकर जीवन-लीला की इतिश्री कर लेते हैं।

सचल भाष के संजाल का जंजाल देखिये। अली गढ़ के दसवी पास युवकने छह राज्यों की लड़कियों, को कैसे ठगी-देखिये-शादी डाट काम पर प्रोफाईल बनाकर शादी के बहाने लड़कियों से दोस्ती कर ली। भिन्नभिन्न नाम से पायलट का फोटो डालकर वह लड़कियॉ से पहले दोस्ती फिर शादी की पेशकर शुरू कर देता था। कुछ ही दिनो बाद सगाई की तिथि तय हो जाती थी। सगाई की तिथि के ठीक पहले वह परिवार में हादसा होने की बात युवती को बताता। चिकित्सा के नाम पर वह लड़कियॉ से भारी धनराशि ऐंठ लेता था। उसने उत्तर प्रदेश दिल्ली, हरियाणा, महाराष्ट्र, पंजाबं, मध्यप्रदेश की लड़कियॉ से मात्र मोबाइल के माध्यम से यह ठगई कर ली। पकड़ में आने पर पुलिस ने उसके बैंक खाते के 3.10 लाख रुपये सीजकर दिए हैं। बड़े शुभ व सतर्कता से उसे पकड़ा जा सका। उसके पिता अलीगढ़ की ताला फैक्टरी में नौकरी करते हैं।

इस सारे संतापकारी वर्णन का आशय यह न समझा जाये कि मोबाईल तथा इसके अन्यान्य उपकरण हानिप्रद व उपद्रवकारी ही हैं। नहीं, बहुत उपयोगी व तात्कालिक स्तर पर लाभ कारी भी हैं। वे जिनके हाथ में जाये उनके माथे संस्कारित होने चाहिए। ऐसा होने पर अपराध जनित व्याधियाँ सीमित रहेंगी। तब अपराधी अल्प व सीमित होंगे, जिनपर सहज नियंत्रण करना संभव होगा। मोबाइल के सुखकारी उपयोग का प्रसंग प्रस्तुत है। पश्चिम बंगाल के स्टेशन पर गाना गाकर रानूमण्डल अपना पेट पालती थीं। स्टेशन पर मैले कुचैले कपड़ों में रानू को गाने का वीडियो ऐसा प्रचारित हुआ कि उसका भाग्य जग गया। उसको गाने के निमत्रण मिलने लगे मुम्बई के रियालिटी शो में गाने का आमन्त्रण मिला है। पार्लर में, हयर स्टाइल युक्त उसके फोटो प्रसारित हो रहे हैं। यह प्यार का नगमा हैं गीत गाने वाली रानू मण्डल उद्धार की उपमा बनकर दूरदर्शन के रजत पट पर दर्शकों के सम्मान की जीवन्त प्रतिमा बन गयी।

सचल भाष व इसके अनेकश: उपस्करों के प्रयोग कर्ताओं को इतना प्रशिक्षण तो दिया ही जाना चाहिए कि वे सडक पर वाहन चलाते समय इनका प्रयोग न करें, करे भी तो सुरक्षित रुप से बगल में रोक कर करें। गाड़ी चलाये साथ ही मोबाइल परणीत-नृत्य देख कर दुर्घटनाओं को आमन्त्रण न दे! कठोपनिषद का सचेत कथन है:-

''भद्रो हिस मनुष्योऽस्ति स्वन्वतान य: साधु पश्यति'' (2.1) अर्थात-वह मनुष्य सचमुच भला है जो उत्तम परिणामो की भली प्रकार देख लेता है, 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्यवरान्निबोधत। क्षुरस्य धारा निशिता दूरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति।' (3-14) अर्थात उठो, जागो प्रमाद को त्याग दो। अनुभवी बड़ो से बोध प्राप्त करो, क्योकि इस संसार सरिता को पार करना तीक्षण दूरे की दुर्लध्य धार को पार करने के समान है। उपनिषद तो एक छुरे की धार का बात करता है, जबकि मोबाइल तो हर दिशा में छुरे ही छुरे की बौछार कर देता है। इसके मारक क्रोध से बचकर सुधारक शोध को अपना लेना चाहिए।

प्रसिद्ध भजनोपदेशक कुंवर सुखपाल आर्य का निधन

प्रसिद्ध भजनोपदेशक, अनेक पुस्तकों के रचयिता, लेखक, गायक श्री कुंवर सुखपाल आर्य (मुजफ्फरनगर) का 5 अगस्त, 2019 को 5 बजे निधन हो गया। 7 अगस्त 2019 को पाल धर्मशाला में उनकी स्मृति में शांति यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुजफ्फरनगर की विभिन्न आर्य समाजों, आर्य समाज नई मण्डी, आर्य समाज गांधी कालोनी, आर्य समाज शहर के सदस्यों सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने उपस्थित होकर कुंवर सुखपाल जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर विभिन्न वक्ताओं कुवर सुखपाल आर्य के जीवन के संस्मरण तथा उनके द्वारा विपरीत परिस्थतियों में किये गये आर्य समाज के प्रचार कार्य की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

मृत्यु से कुछ समय पूर्व लिखे गये कुंवर सुखपाल आर्य के संक्षिप्त जीवन परिचय से आज के उपदेशको तथा भजनोपदेशकों की स्थिति का सटीक परिचय प्राप्त होता है। कृपया इस जीवन परिचय को गम्भीरता से पढ़े मनन करे तथा तदनुकूल आचरण करें।

माह कृष्ण पक्ष 4 अर्थात संकटमोचन चतुर्थी तदनुसार 23 जनवरी, 1930 को एक भूमिहीन गरीब श्री शंकरलाल जी व माता भगवती जी के सहा ग्राम करौदा हाथी, जिला-मुजपफरनगर (उ.प्र.) में मेरा जन्म हुआ! माता-पिता ने सुखपाल नाम रखकर भौतिक जगत को मेरी पहचान बताई। सन 1942 में 11 वर्ष के बालक की वीतराग पद्मभूषण श्री स्वामी कल्याणदेव जी को माता-पिता ने गुरुकुल के लिए सौंप दिया। गुरुकुल कांगडी की शाखा गुरुकुल घासीपुरा जिला मुजफ्फरनगर में 2 वर्ष निःशुल्क विद्या ग्रहण की। फिर विद्यार्थियों को शिक्षा ग्रहण हेतु 10 रुपये प्रतिमाह कर दिया। मेरी पढ़ाई अवरोधक हो गई। मैं वही गुरुकुल में फिर 4 रुपये प्रतिमाह सेवक बन सारा दिन कार्य करता। अवकाश निकाल प्रात: रात्रि में पढ़ता। अचानक पाचक के भागने पर में पाचक का कार्य भी करने लगा। फिर वेतन 11 रुपये प्रतिमाह हो गया। उसी गुरुकुल में 5 भीडिल प्रथमा एव प्रभाकर अच्छे नम्बरों से उत्तीर्ण की। इसी बीच हर वर्ष गुरुकुल के वार्षिकोत्सव एव अन्यत्र जहा भी मौका मिलता अपने एवं अन्य वैदिक कवियों के भजन गीत गाता। एक बार पं. रामचन्द्र देहेलवी शास्त्रार्थ महारथी जी ने मुझे एक रुपया चांदी का मंच पर एक गीत पर देकर उत्साहित किया। तभी से मेरा नाम कुंवर सुखपाल आर्य हो गया। ग्यारह वर्षो के बाद गुरुकुल से निकल कर अपना सामाजिक जीवन शुरु किया। 1951 में मार्केटिंग रीजनल फूड कन्ट्रोल में लिपिक के पद पर 55 रुपये प्रतिमाह राजकीय सेवा में पदार्पण किया। शीघ्र मैंने पदोन्नति प्राप्त कर सहायक मार्केटिंग इन्सपेक्टर का पद प्राप्त कर लिया। 82 रुपये प्रतिमाह वेतन हो गया। सन 1954 से55 तक चौ. पृथ्वी सिंह बेधडक के पास रहकर भजनोपदेश का कार्य सीखा। सन् 1955 में गुरु जी को अपने गांव में बुलाकर 4 दिन वैदिक यज्ञ वैदिक प्रचार कराकर बेधड़क जी को गुरुदक्षिणा दी। उसके बाद निरन्तर 1955 से अपनी भजन मण्डली बना वैदिक प्रचार के साथ हिन्दी रक्षा आन्दोलन, गऊ रक्षा आन्दोलन में भाग लिया। अपने गाँव में आर्य समाज भी स्थापित की। सन 1955 में सार्वदिशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष लाला राम गोपल जी शाल वालों को बुलाकर अपने गांव करौदा हाथी में आर्य समाज की स्थापना एवं एक विशाल आर्य महासम्मेलन तीन दिन का मनाया। सन 1962 में चीनी अटैक पर पं. जवाहर लाल नेहरू जी प्रधानमंत्री जी द्वारा नेफा मोर्चे पर आर्य समाज की चार भजन मण्डली पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी के प्रयास से भेजी गई थी। उसमे मेरा भी नम्बर आया। 24 दिन नि:स्वार्थ सेना के जवानों में जोशीला प्रचार सीमाओं पर किया। तीन लड़के मुस्लिम अपने पास रखकर आर्य उपदेशक बनाये। 27 पुस्तकें इतिहासों फुटकर गीता की समय-समय पर लिखी। अनेकों शिष्य मण्डली नई तैयार की। जैसे आसाराम प्यारेलाल, घनस्याम प्रेमी, नरेश निर्मल, राजपाल सैनी अन्य अनेकों शिष्य तैयार किये। घर में चार पुत्र एक पुत्री है। बेटी की शादी शहर ऋषिकेश में की। बेंटे तीन गुरुकुल ततारपुर करतार में पढ़ाये। बड़ा बेटा सुभाष राही दूसरा सतीश सुमन दोनों आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में भजनोपदेशक पद पर है। तीसरा बेटा सुनील दत शास्त्री फिरोजपर शहर पंजाब में दो आर्य समाजों का पुरोहित है। चौथा बेटा सत्यकाम आर्य बी.कॉम हेल्थ क्लब का बॉडी बिल्डर शादीशुदा बेरोजगार है। 45 वर्ष किराये के मकानो में रहा। मैं मेरी पत्नी बेटा सुभाष राही सत्यकाम विद पत्नी सतीश सुमन विद पत्नी ससुराल में रहता है। सुनील दत्त शास्त्री सपरिवार पंजाब फिरोजपुर में रहता है। करीब 8 वर्षों से मुम्बई सांताक्रुज आर्य समाज से एक हजार रुपये प्रतिमाह विद्वत् सेवा निधि से निरन्तर सहयोग मिल रहा है। मेरे नाम से आज भी कोई चल-अचल सम्पत्ति नही है। अब 84 वर्ष की आयु मे उत्सव आने बन्द हो गये है। स्वास्थ ठीक साथ दे रहा है, कोई बुलाता है तो प्रचार अब भी कर लेता हूँ। मात्र एक हजार रुपये ही आय का साधन है, ये मेरे जीवन की सफलता रही है। कष्ट के लिए धन्यवाद।

अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें

1 प्रत्येक मनुष्य को अपने प्रकृतिगत स्वभाव की जानकारी अवश्य होनी चाहिए कि उसका शरीर किस प्रकृति का है।

2 आयुर्वेद के त्रिदोष सिद्धांत से पता चला कि वात्, पित्त और कफ इन तीनों में से किसी एक अथवा दो से युक्त मनुष्य के शरीर की प्रकृति होती है। इसका पता लगाने के लिए आप अपने दायें हाथ की तर्जनी मध्यमा और अनामिका इन तीनों अंगुलियों को बायें हाथ की कलाई के किसी एक नस के ऊपर तीनो को एक साथ रखें जिस अंगुली पर तेज धक्के नाड़ी चलने की होगी उसी अंगुली के द्वारा आप अपनी प्रकृति को पहचान सकते है। वह इश प्रकार है- तर्जनी अंगुली से वातज प्रकृति, मध्यमा अंगुली से पित्तज प्रकृति और अनामिका अंगुली से कफज प्रकृति के शरीर का पता चलता है, किन्तु पहली बार यदि आप पता लगाना चाहते है तो खाली पेट नाड़ी छूकर ज्ञात करें।

3 प्रकृति के विपरीत गुण वाले रसों का सेवन शरीर के लिए लाभदायक है अर्थात वात प्रकृति वाले व्यक्ति को मधुर-मीठा, अम्ल-खट्टा और लवण-नमक रसों से युक्त भेजन का सेवन करना लाभदायक है, पित्त प्रकृति वाले मनुष्य को मधुर-मीठा, तिक्त-तीखा एंव कषाय-कसैले गुण वाले आहार का सेवन करना चाहिए तथा कफ प्रकृति वाले व्यक्ति को कटु-कडवा, तिक्त-तिखा और कषाय-कसैले रसों से युक्त भोजन करना चाहिए। मुख्यत: अपने शारीरिक स्थिति को ध्यान में रखकर भोजन हमेशा ऋतु के अनुकुल हितकारी और उचित मात्रा में होना चाहिए, जो असानी से पच सके। गरिष्ठ एवं तैलीय पदार्थों तथा तेज मिंच मसाले से रहित भोजन ही स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है, किसी भी पदार्थ का अति सेवन हानिकारक होता है।

4 देश, काल, परिस्थिति के अनुसार भी शारीरिक स्वास्थ पर असर पड़ता है। जिस स्थान में जल की मात्रा कम हो, धूप तेज हो और वायु का संचार भी तेज हो पर वनों में वृक्ष कम पाये जाते हो, ऐसे स्थान को पित्त प्रधान क्षेत्र माना गया है। अत: यहाँ के निवासीयों को प्रकृति के अनुसार शीत, मधुर, स्निग्ध पदार्थो का सेवन करना चाहिए। इससे विपरीत जहाँ धूप कम पड़ती हो, वायु की गति भी कम हो और जल मात्रा अधिक हो तथा धरती हरियाली से युक्त हो, ऐसे स्थान को कफ प्रधान कहा गया है। अत: इस क्षेत्र के निवासीयों को लद्यु-हल्का, उष्ण-गरम, रुक्ष-रुखा, कटु-कड़वे पदार्थो का सेवन प्रकृति के अनुसार करना चाहिए।

5 मनुष्य का शरीर मुख्यत: दो प्रकार से प्रभावित होता है अर्थात् वात और कफ प्रकृति के व्यक्ति शीतगुण से युक्त होते और पित्त प्रकृति के उष्ण गुण से प्रभावित है।

6 ऋतुओं में मुख्यत: सर्दी, गर्मी और वर्षा का प्राकृतिक प्रभाव भी इस शरीर पर पड़ता हैं। सर्दी में पित्त का प्रकोप होता है अर्थात् मनुष्य की जठराग्नि तेज हो जाती है। अत: इस काल में लद्यु, शीत, मधुर और तिक्त रस वाले आहार लेनी चाहिए साथ ही साथ गुरू, उष्ण, स्निग्ध, अम्ल, लवण का भी सेवन अपने प्रकृति के अनुसार करें। गर्मी में कफ का प्राकोप होता है, इसीलिए समय के अनुकूल लद्यु, उष्ण, रूक्ष कटु, तिक्त, कषाय रस से युक्त भोजन करें और इस काल में मालिश और व्यायाम अनिवार्य है किन्तु दिवाशयन एंव सम्भोग करना निषेध है। वर्षा में वात का प्रकोप होता है। जठराग्नि कमजोर हो जाती है। अत: इस काल में स्निग्ध, लवण और अम्ल गुण से युक्त आहार का सेवन अपने प्रकृति के अनुसार करें। अर्थात् जिस भोजन से आपका स्वास्थ्य बिगड़ता है उससे बचने का प्रयास करें।

7 शिशु अवस्था को छोड़कर मनुष्य का शरीर अवस्था के अनुसार भी वात, पित्त और कफ से प्रभावित होता है। यथा-बाल्यावस्था में कफ, यौवनावस्था में पित्त और वृद्धावस्था में वात की प्रधानता होती है।

इस प्रकार प्रकृति के अनुकूल जीवन यापन करने पर मनुष्य सदा रोगों से मुक्त रहता है, फिर भी यदि किसी कारण वश कोई अस्वस्थ हो जाये तो उसके लिए प्राचीन परम्परा से स्वच्छ जल वायु का सेवन कर पुन: स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम ऋतु एवं रोगानुसार निर्मित हवन सामाग्री के साथ उसी गुण धर्म के समिधाओं का भी प्रयोग करें तो यज्ञ से चमत्कारी लाभ की प्राप्ति होती है।

1. जोड़ों के दर्द, कैंसर अथवा चर्मरोगी को गूलर की समिधा से हवन करना चाहिए।
2. ब्लड प्रेशर, शुगर एंव धातु रोगी को बड (बरगद) की समिधा से हवन करना चाहिए साथ ही साथ धातू सम्बन्धी रोगों के लिए एक सौ. ग्राम गन्ने के रस में दस ग्राम शहद मिलाकर उस रस में गूलर की समिधा को भिगोकर यज्ञाग्नि में एक समिधा की भी आहुति दें।
3. हृदय रोग, क्षय रोग एंव श्वास सम्बन्धी रोगों में पीपल की समिधा का प्रयोग करें।
4. मलेरिया, विषमज्वर तथा शिरोगत रोग में आम की समिधा से हवन करें।
5. लौ ब्लड प्रेशर के लिए सामाग्री में मखाने का प्रयोग करें तथा हाई ब्लड प्रेशर के लिए मखाने का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
6. यज्ञ करते समय हवन कुंड में धुआ बिल्कुल भी नहीं होना चाहिए और आहुति की मात्रा भी ठीक होनी चाहिए। अर्थात दूसरी आहुति देने से पूर्व पहली आहुति जल जानी चाहिए तभी यज्ञ का लाभ शीघ्र मिलता है।

यज्ञीय चिकित्सक- डा. प्रद्युम्न कुमार शास्त्री
1/234 माता यशोदा भवन, किसुनपुर प्राष्ट-चतरा
जिला-चतरा (झारखण्ड) 825401
चलभाष- 09334275673

वितरक
आर्य समाज, आर्य नगर (ज्वालापुर)
हरिद्वार, उतरांचल

वैदिक मिशन मुम्बई

अध्यक्ष-**सोमदेव शास्त्री**–०९८६९६६८१३० मन्त्री-**संदीप आर्य**–०९९६९०३७८३७

निमन्त्रण पत्र

(गुरुकुल सम्मेलन)

दिनांक 20-21-22 मार्च 2020

मान्यवर

सादर नमस्ते।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सौजन्य से वैदिक मिशन, मुम्बई, पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल, प्रतापनगर, चितौड़गढ़ (राज.) में दिनांक 20 से 22 मार्च 2020 तक स्वामी प्रणवानन्दजी (अध्यक्ष, महर्षि दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् दिल्ली) की अध्यक्षता में एक संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें वैदिक सिद्धान्तों का गहन अध्ययन, गुरुकुल शिक्षण प्रणाली का पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय विकास में योगदान, आर्ष-पाठ विधि का संरक्षण गुरुकुलों का सुदृढ़ संगठन, सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम की आवश्यकता इत्यादि विषयों पर गहन चिन्तन किया जाएगा। इस अवसर पर अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सबल बनावें।

सम्मेलन अध्यक्ष- **स्वामी प्रणवानन्दजी**

अध्यक्ष वैदिक गुरुकुल परिषद, दिल्ली

विशिष्ट अतिथि महानुभाव

*** स्वामी आर्यवेशजी ***
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

*** श्री सुरेशजी आर्य ***
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

*** स्वामी धर्मानन्दजी ***
संस्थापक एवं आचार्य गुरुकुल आमसेना, उडीसा

*** डॉ. रुपकिशोरजी ***
कुलपति, गुरुकुल कॉगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

*** डॉ. प्रवीणजी माथुर ***
निदेशक, दयानन्द शोध-पीठ, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, अजमेर

*** श्री अशोकजी आर्य ***
कार्यकारी अध्यक्ष, सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर

*** श्री विठ्ठलरावजी आर्य ***
मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

*** श्री प्रकाशजी आर्य ***
मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

*** श्री विनयजी आर्य ***
मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

*** श्री अरुणजी अबरोल ***
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, मुंबई

*** श्री रमेश सिहजी आर्य ***
मन्त्री आर्य समाज सान्ताक्रुज, मुम्बई

कार्यक्रम स्थल

पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुलल, प्रतापनगर, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
दूरभाष : ९४१४११०६४६ / ९४६०६१७००८

सोमदेव शास्त्री-अध्यक्ष **संदीप आर्य**-मन्त्री **परिक्षित आर्य**-कोषाध्यक्ष

चन्द्रगुप्त आर्य, डॉ. अनिशा परगल, संगीत आर्य, ओमप्रकाश शुक्ल, जयन्तीभाई पटेल, रमेश हासानन्दानी, ट्रस्टीगण वैदिक मिशन मुम्बई

स्वागत समिती

डॉ. धनंजय आचार्य, देवेन्द्रसिंह शेखावत, डॉ. सीमा श्रीमाली, रुपसिंह शक्तावत गिरिराज गील, सुरेशचन्द्र शर्मा, कन्या गुरुकुल, चित्तौड़गढ़

शनिवार दिनांक २१ मार्च २०२०

तृतीय सत्र

ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या) सायम् 6.00 से 6.30
संगीत 6.30 से 7.00
भक्ति प्रवचन रात्री 7.00 से 8.30
प्रीतिभोज रात्री 8.30 से 9.00 बजे तक

रविवार दिनांक २२ मार्च २०२०

यज्ञ-प्रात: 8.00 से 8.30
भजन-प्रात: 8.30 से 9.00
आध्यात्मिक प्रवचन- 9.00 से 9.30
स्वल्पाहार : 9.30 से 10.00

चतुर्थ सत्र १०.३० से १२.३०

कार्य विवरण, वैदिक मिशन
: श्री संदीप आर्य, मन्त्री वैदिक मिशन मुम्बई

अंग्रेजी भाषण : प्रणव शास्त्री

शिवराजवती ओंकारनाथ धर्मार्थ न्यास मुम्बई द्वारा विशिष्ट सम्मान
: आचार्य ओमप्रकाश- आबू पर्वत

आशीर्वचन : विशिष्ट अतिथि एवं संन्यासी महानुभाव

गुरुकुलों के भावी कार्यक्रम रुपरेखा : डा धनंजय-मन्त्री गुरुकुल परिषद्

अध्यक्षीय भाषण : स्वामी प्रणवानन्दजी

संयोजक : संदीप आर्य, मन्त्री वैदिक मिशन, मुंबई

धन्यवाद : डॉ. सोमदेव शास्त्री-अध्यक्ष, वैदिक मिशन मुंबई

प्रीतिभोज : 12.30 से 01.30

समापन सत्र एवं पारित प्रस्ताव

दोपहर 2.30 से 4.30
धन्यवाद एवं शान्तिपाठ
स्वल्पाहार 4.30 बजे

आत्मविश्वास

डॉ. विनोदचद्र विद्यालंकार

दिप्संन्त इद्रिपवो नाह देभु: (१।१४७।३)
जिघांसु काम क्रोधादि रिपु भी मेरी हिंसा नहीं कर सकते।
अहं ह्यु१ग्रस्तविषस्तुविष्मान् (१।१६५।६)
मैं उग्र हूँ, बली हूँ, महान् हूँ।
विश्वस्य शत्रोरनमं वधस्त्रै: (१।१६५।६)
सब शत्रुओं को अपने वध-कौशलों से नमा दूँगा।
वर्धी वृत्रं मरुत इन्द्रियेण (१।१६५।८)
हे मेरे प्राणो, मैंने आत्मबल से पाप का वध कर दिया है।
स्वेन भामेन तविषो बभूवान् (१।१६५।८)
अपने तेज से मैं बलवान् बना हुआ हूँ।
अहं ह्यु१ ग्रो मरुतो विदान: (१।१६५।१०)
हे मनुष्यों, मैं उग्र हूँ, ज्ञानी हूँ।
नि कर्म मन्युं दुरेवस्य शर्धत: (२।२३।१२)
दु:साहसी दुराचारी के क्रोध को हम चूर कर देंगे।
किं मामनिन्द्रा: कृणवन्ननुक्था: (५।२।३)
स्तुति-कीर्तन न करने वाले नास्तिक जन मेरा क्या कर सकते हैं?
न वरन्ते परिबाधो अदेवी: (५।२।१०)
आसुरी बाधाएँ मुझे सत्कार्य से रोक नहीं सकती हैं।

महत्वाकांक्षा

उत न: सुभगाँ अरि: (१।४।६)
हम ऐसे बनें कि शत्रु भी हमारा गुणगान करें।
ऋध्याम कर्मापसा नवेन् (१।३१।८)
हम नये-नये कर्मों से अपने साध्य को बढ़ायें।
मारातयो जुहूरन्त (१।४३।८)
शत्रुजन हमारे प्रति कुटिलता न कर सकें।
उद्धयं तमसस्परि (१।५०।१०)
हम तामसिकता के अन्धकार से ऊपर उठ जायें।
अस्य पति: स्यां सुगव: सुवीर: (१।११६।२५)
उत्तम भूमि वाला और उत्तम वीरों वाला मैं इस राष्ट्र का पति बनूँ।
मा नो अरातिरीशत देवस्य मर्त्यस्यच (२।७।२)
देव और मनुष्य के अदान के पात्र हम न हों।
मा नो दु:शंसो अभिदिप्सुरीशत (२।२३।१०)
बुरा परामर्श देने वाला जिघांसु पुरुष हमारा स्वामी न बने।
प्र सुशंसा मतिभिस्तारिषीमहि (२।२३।१०)
उत्तम वचन बोलने वाले हम अपनी बुद्धियों से उन्नति प्राप्त करें।
न मा तमन्न श्रमन्नोत तन्द्रत् (२।३०।७)
हमें ग्लानि-श्रम और तन्द्रा न सताये।
परिणो हेती रुद्रस्य वृज्या: (२।३३।१४)
रुद्र का शस्त्र हम पर न पड़े।
अग्रेर्भाम मरुतामोज इमहे (३।२६।६)
हम अग्नि का तेज और-आन्धियों का ओज चाहते हैं।
अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठाम् (५।४७।७)
हम थाह और प्रतिष्ठा को प्राप्त करें।
अभि पूर्तिमश्याम् (६।१३।६)
मैं पूर्णता को प्राप्त करूँ।
शत्रो: शत्रोरुत्तर इत्स्याम (६।१९।१३)
हम प्रत्येक शत्रु से अधिक उत्कृष्ट हों।
स्वर्वज्ज्योतिभयं स्वस्ति (६।४७।८)
हमें आनन्दमय ज्योति, अभय और कल्याण प्राप्त हो।
राया मदेम तन्वाइ तना च (६।४९।१३)
हम धन, शरीर और सन्तान से आनन्दित रहें।
स्पृधो अदेवीरभि च क्रमाम (६।४९।१५)
आदिव्य स्पर्धालु सेनाओं को हम आक्रान्त कर लें।
विश आदेवीरभ्य१श्नवाम (६।४९।१५)
दिव्य प्रजाओं को हम प्राप्त करें।
देवस्य वयं सवितु: सवीमनि (६।७१।२)
हम सविता प्रभु की प्रेरणा में रहें।
माप्सव: परिषदाम मादुव: (७।४।६)
हम रूपरहित और पूजारहित होकर स्थित न हों।
सत्या भवन्त्वाशिषो नो अद्य (७।१७।५)
आज हमारे मनोरथ पूर्ण हों।
जीवा ज्योतिरशीमहि (७।३२।२६)
हम जीवित-जागृत होते हुए ज्योति प्राप्त करें।
इषं स्वश्च धीमहि (७।६६।९)
रस और आनन्द को हम धारण करें।
परिनो हेळो वरुणस्य वृज्या: (७।८४।२)
सविता प्रभु के यश को हम पाना चाहते हैं।
मा भेम मा श्रमिष्म (८।४।७)
हम डरे नहीं, थकें नहीं।
न में स्तोतामतीवा न दुर्हित: (८।१९।२६)
मतिहीन और कुचक्री मनुष्य मेरा स्तोता न हो।
सुतमीणमधि नाव रुहेम (८।४२।३)
हम सुगमता से पार कराने वाली यज्ञ रूपी नौका पर चढ़ें।
तरन्त: स्याम दुर्गहा (८।४३।३०)
हम दुर्गम कठिनायों को पार कर जायें।
वयं सोमस्य विश्वह प्रियास: (८।४८।१४)
हम सदा ही सोम प्रभु के प्यारे बने रहें।

आर्य समाज सान्ताक्रुज़ का 76 वाँ वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार समारोह

गुरूवार दि. 23.01.2020 से रविवार दि. 26 जनवरी, 2020 तक आर्यसमाज सान्ताक्रूज़ का 76 वाँ वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार समारोह आर्य समाज के विशाल सभा गृह में मनाया गया। इस अवसर पर ऋग्वेद पारायण के मन्त्रोच्चारण के साथ यज्ञ प्रात: 8.00 बजे से 10.00 बजे तक आयोजित किया गया जिस के ब्रह्मा डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई) एवं वेदपाठी पं. नामदेव आर्य, पं. विनोद कुमार शास्त्री, पं. नरेन्द्र शास्त्री, पं. प्रभारंजन पाठक एवं भूपेन्द्र शास्त्री थे। श्री प्रभाकर शर्मा जी भजनोपदेशक के रूप में उपस्थित थे। सायंकालीन सत्र में दि. 23, 24, 25 जनवरी, 2020 को सुप्रसिद्ध भजनोपदेश श्री प्रभाकर शर्मा जी एवं श्री योगेश आर्य जी के सुमधुर भजन हुए। इसी सत्र में प्रख्यात वैदिक प्रवक्ता डॉ. रूप किशोर शास्त्री (उप कुलपति गुरूकुल कांगडी) के वेदों एवं आर्ष ग्रंथों के आधार पर सारगर्भित एवं प्रभावोत्पादक प्रवचन हुए।

वार्षिकोत्सव के अवसर पर 'वैदिक पुस्तक मेला' विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा जिसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रन्थों की प्रदर्शनी एवं उनका विक्रय किया गया।

दि. 23 जनवरी 2020 को मध्याहन 3.00 से 5.30 बजे तक ''आर्य महिला सम्मेलन'' श्रीमती सरोजनी गोयल (किम्सर्कल) की अध्यक्षता में हुआ। इस कार्यक्रम का सफल संचालन श्रीमती सुदक्षिणा शास्त्री (संयोजिका: आर्य महिला समाज सान्ताक्रुज़) ने किया। जिस में आर्य समाज अन्धेरी की महिला संयोजिका सुषमा जी आर्य, श्रीमती सुनीता बहल, आर्य समाज घाटकोपर से श्रीमती जयाबेन पटेल, आर्य समाज मुलुण्ड से श्रीमती अनिता वर्मा, आर्य समाज भांडूप से श्रीमती शशी खन्ना, आर्य समाज गोरेगाव से श्रीमती रीता गुप्ता व श्रीमती गुप्ता व अन्य माताओं बहनों ने अपने अपने ज्ञान वर्धक वक्तव्य और भजन प्रस्तुत किए। आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई की बहनों द्वारा भी सुन्दर सामुहिक भजन प्रस्तुत किया गया। सुन्दर आयोजन में सुन्दर संचालन, धन्यवाद व दूर दूर से आई माताओं बहनों का आभार व्यक्त किया गया और जलपान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

दि. 24 जनवरी 2020 को रात्रि के सत्र के समारोह के मुख्य वक्ता डॉ. सत्यपाल सिंह (पूर्व मुम्बई पुलिसकमिश्नर एवं केन्द्रिय राज मंत्री) ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा कि आर्य समाज सान्ताक्रुज पुरस्कारों से वैदिक विद्वानों को पुरस्कृत कर के उन के मनो बल को बढ़ाने का कार्य करता है। आगे कहा विद्या चार प्रकार से आती है अध्यन, अभ्यास, अनुसन्धान, ईश्वर विश्वास। हम सब को वेद का प्रचार प्रसार अधिकाधिक तथा उत्तमोत्तम प्रकार से करना होगा।

दि. 25 जनवरी 2020 को मध्याहन वर वधु चयन सेवा का परिचय मिलन सम्मेलन हुआ जिसमें अनेक युवक युवतियों ने भाग लिया। इसका संचालन श्रीमती प्रेमा मिस्त्री व श्रीमती सुदक्षिणा शास्त्री ने किया।

दि. 26 जनवरी 2020 को प्रात: 7.45 बजे आर्य समाज सान्ताक्रुज के प्रधान श्री दीपक पटेल जी ने ध्वज उत्तोलन किया। प्रात: 8 से 10 तक यज्ञ की पूर्णाहुति हुई तत्पश्चात प्रात: राश के उपरान्त पुरस्कार समारोह का शुभारम्भ हुआ। मन्त्रोच्चारण एवं पुष्पवृष्टि के साथ विद्वानों का मंच पर आगमन हुआ। तत्पश्चात पुरस्कारों का विवरण महामंत्री रमेश सिंह ने प्रस्तुत किया।

''वेद वेदांग पुरस्कार प्राप्तकर्ता डॉ. रूप किशोर शास्त्री (उप कुल पति गुरूकुल कांगडी) का जीवन परिचय डॉ. सोमदेव शास्त्री जी ने दिया। उन्हें वेद वेदांग पुरस्कार स्वरूप रू. 51,000/- का चेक स्मृतिचिन्ह, शॉल, श्रीफल व मोतीमाला से सम्मानित किया गया। अपने सम्मान के अवसर पर बोलते हुए श्री उप कुलपति जी ने कहा कि मैं ऋषि दयानन्द के द्वारा प्रति पादित सिद्वान्तों प्रचार प्रसार आजीवन करता रहूंगा।

वेदो पदेशक पुरस्कार प्राप्त कर्ता डॉ. पुनीत आर्य (मेरठ) का संक्षिप्त जीवन परिचय डॉ. सोमदेव शास्त्री जी ने दिया। आपको सम्मान स्वरूप रू.41,000/- का चेक स्मृतिचिन्ह, शॉल, श्रीफल, मोती माला से सम्मानित किया गया। अपने सम्मान के अवसर पर बोलते हुए शास्त्री जी ने कहा कि परम पिता परमात्मा सर्वत्र व्यापक हैं। उसकी सर्वत्र सत्ता विद्यमान हैं। सदाचरण ही जीवन को समुन्नत बनाता है। मैं इस समाज के सभी सदस्यों का अत्यन्त आभारी हूँ धन्यवाद।

मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार प्राप्त कर्त्ता श्री धर्मपाल आर्य (दिल्ली) का संक्षिप्त जीवन परिचय श्री संदीप आर्य ने दिया। आप को मेघ जी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार स्वरुप रु. 35,000/- का चेक, शॉल, ट्रॉफी, श्रीफल व माला भेंट कर सम्मानित किया गया।

पं. युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार प्राप्त कर्त्ता आचार्य शिवकुमार शास्त्री (देहरादून) का संक्षिप्त जीवन परिचय श्री संदीप आर्य ने दिया। आपको पं. युधिष्ठिर मीमांसक स्मृतिपुरस्कार स्वरुप रु. 15,000/- का चेक, शॉल, ट्रॉफी, श्रीफल एवं माला से सम्मानित किया गया।
श्रीमती कृष्णा गान्धी आर्य युवक पुरस्कार प्राप्तकर्त्ता ब्र. दिनेश (रोजड) का संक्षिप्त जीवन परिचय श्री लालचन्द आर्य ने दिया। आपको श्रीमती कृष्णा गांधीआर्य युवक पुरस्कार स्वरुप रु. 15,000/-का चेक, शॉल, ट्रॉफी, श्रीफल व माला भेंट कर सम्मानित किया गया। तत्पश्चात ब्र. दिनेश जी ने कहा कि'' मैं जीवन पर्यन्त शिक्षण एवं सेवा का कार्य करता रहूँगा।''

श्रीमती लीलावती महाशय आर्य महिला पुरस्कार प्राप्त कत्री श्रीमती कमला नरेन्द्र भूषण (केरल) का संक्षिप्त जीवन परिचय श्रीमती सुदक्षिणा शास्त्रीने दिया।आपकोश्रीमती लीलावती महाशय आर्य महिला पुरस्कार स्वरुप रु.30,000/- का चेक, शाल, ट्रॉफी, श्रीफल एवं माला से सम्मानित किया गया।

स्व. नारायण दास हासानन्दानी विशिष्ट वेदांग पुरस्कार प्राप्तकर्ता

नूतन निष्काम पत्रिका वर्ष–११ अंक–०२ मुम्बई फरवरी – २०२० || पृष्ठ–१६ || मूल्य– रु. ९/–

फाल्गुन – २०७६ (२०२०) Post Date : 25-02-2020 MCN/136/2019-2021 MAHRIL 06007/31/12/21-TC पोष्ट आफिस : सांताक्रुज़ (प.)

आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई का मुखपत्र

संपादक : **संगीत आर्य**

मुद्रक एवं प्रकाशक : **चन्द्रपाल गुप्त द्वारा कृष्णा प्रिंटिंग प्रेस,** २६, मंगलदास रोड, मुंबई–२. से मुद्रित कराकर आर्य समाज भवन, वी. पी. रोड, (लिंकिंग रोड), सान्ताक्रुज़ (प.) मुंबई–४०० ०५४. से प्रकाशित किया। ● **दूरभाष : २६६० २८००/२६६० २०७५**

प्रति, ______________

____

____

टिकट

स्वामी यज्ञमुनि (हरिद्वार) का संक्षिप्त जीवन परिचय श्रीलालचन्द आर्य ने दिया । आपको स्व. नारायण दास हासानन्दानी विशिष्ट वेदांग पुरस्कार स्वरुप रु.15,000/- का चेक, शाल, ट्रॉफी, श्रीफल एवं मोती माला से सम्मानित किया गया। आपने अपने सम्मान के अवसर पर विचार प्रकट करते हुए कहा कि हम सबको आर्य समाज के संगठन की ओर ध्यान देना चाहिए। और वेदों की विचार धारा को घर घर पहुँचानी चाहिए।

श्री हर भगवान गांधी मेधावी पुरस्कार प्राप्त कर्ता आचार्य कर्मवीर (रोजड) का संक्षिप्त जीवन परिचय श्री लालचन्द आर्य ने दिया। आपको श्री हरभगवान गांधी मेधावी पुरस्कार स्वरुप रु. 15,000/- का चेक, शाल, ट्रॉफी, श्रीफल एवं मोती माला से सम्मानित किया गया। आपने अपने सम्मान के सुअवसर पर विचार प्रकट करते हुए कहा कि हम सब को आर्य समाज के संगठन की ओर ध्यान देना चाहिए।

श्रीमती शिवराजवती आर्या मेधावी छात्रा पुरस्कार स्वरुप रु.5,000- का चैक श्री आकाश आर्य (गुरूकुल मंझावली, हरियाणा) के लिये भेजने को कहा गया।

श्रीमती शिवराजवती आर्या मेधावीछात्र पुरस्कार स्वरुप रु. 5,000/- का चैक श्री दिनेश सिंह (गुरूकुल पौंधा, देहरादून) के लिये भेजने को कहा गया।

श्री झाऊलाल शर्मा गुरुकुल सहायता पुरस्कार स्वरुप रु.15,000/-का चैक गुरूकुल तुरंगा रायगढ के लिये भेजने को कहा गया।

श्रीमती भागी देवी छाबरिया गुरुकुल सहायता पुरस्कार स्वरुप रु.15,000/-का चैक आर्य वन गुरूकुल रोजड के लिये भेजने को कहा गया।

श्री दीपक पटेल प्रधान आर्य समाज सान्ताक्रुज एवं श्री लालचन्द आर्य प्रधान आर्य समाज सान्ताक्रुज ट्रस्ट, ने आर्य समाज सान्ताक्रुज़ की ओर से समस्त आगन्तुक विद्वानों एवं अतिथियों को शाल एवं श्रीफल देकर सम्मानित किया। समस्त कार्यक्रम का सन्चालन महा मंत्री श्री रमेश सिंह एवं मंत्री श्री संदीप आर्य ने किया। अंत में विद्वान, आगन्तुकों, श्रोताओं और कार्यकर्ताओं का हार्दिक आभार एवं धन्यवाद ज्ञापन किया गया। शान्ति पाठ एवं जय घोष हुआ। ऋषिलंगर के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

सन्तोषी सदा सुखी

डॉ. नरेन्द्र शास्त्री

एक सेठ बड़े धनाढ्य, अत्यन्त पुरुषार्थी और कुटुम्ब से भरे-पूरे एक ग्राम में रहा करते थे। उनके समीप ही उसी ग्राम में एक अति दीन, पढ़ा-लिखा, विद्वान् ब्राह्मण रहता था। यह ब्राह्मण बड़ा ही सहनशील और सन्तोषी था।

लेकिन सेठ को दिन-रात यही लगन रहती थी कि अब सौ के दो सौ और दो सौ के चार सौ कर लें। सेठजी इसमें सभी कुछ भूले रहते और चिन्ता में लगे रहते थे।

एक दिन पड़ोसी ब्राह्मण सेठजी को समझाने लगा, ''सेठजी, मनुष्य की इच्छाएँ जैसे-जैसे बढ़ती जाती हैं, वह उनके पूरा करने के प्रयत्न में लगता है और उनके अधूरा रहने से मनुष्य को दु:ख हुआ करता है।'' परन्तु सेठजी का मन, इन बातों में नहीं लगता था।

एक बार उन सेठजी को अचानक यह सूचना मिली कि आपके घर पोते ने जन्म लिया है। सेठजी यह सुनकर खुश हो गए। इतने में खबर आई कि लड़का और उसकी माता दोनों की मृत्यु हो गयी। सेठजी यह खबर सुनते ही महान् दु:ख सागर में डूब गए।

तभी थोड़ी ही देर में एक दूत ने आकर कहा कि आपका एक लाख का माल जहाज में लदा हुआ आ रहा है। सेठजी पुन: उस पौत्र तथा उसकी माता के कष्ट को भूल एक लाख के माल की प्राप्ति की प्रसन्नता में निमग्न हो गए।

वे दूत से प्रश्नोत्तर करने लगे कि वह जहाज अब कहाँ तक आया होगा? तुमने कहाँ छोड़ा था?

यह कह ही रहा था कि थोड़ी ही देर के बाद एक दूसरे दूत ने आकर यह सन्देशा दिया कि वह जहाज, जो आपका माल ला रहा था, वह अमुक बन्दरगाह पर तूफान के कारण डूब गया।

सेठ यह सुनकर शोकसागर में डूब गया और सोचने लगा कि तृष्णा ही सारे दु:खों का मूल है। यदि इतनी तृष्णाएँ न बढ़तीं तो दु:ख भी न बढ़ता।

शिक्षा: मनुष्य को सन्तोष का मार्ग अपनाना चाहिए। सन्तोष ही परम धन है, सुख का मूल है। तृष्णाएँ दु:ख का मूल हैं। तृष्णाएँ अनन्त हैं, वैसे ही दु:ख भी अनन्त हैं। सन्तोषी सदा सुखी रहता है, तृष्णावान् सदा दु:खी रहता है।

❖❖❖